Delhi Postal Regd. No. DL (C) - 01/1272/2021-23 R.N.I. No. 72014/99 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

• नई दिल्ली • वर्ष 23 • अंक 30 • 2 - 8 मई, 2022 प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 30-04-2022 • पेज : 16 • ₹ 10

अर्हत उवाच

णाइकंडूइयं सेयं,
अरुयस्सावरज्झई।।

व्रण को अधिक खुजलाना ठीक नहीं है, क्योंकि उससे कठिनाई पैदा होती है।

* * *

अध्यात्म के शांतिपीठ पर आचार्यश्री महाश्रमण का पावन पदार्पण

हम अपने पुरखों के संदेशों और आदर्शों का अनुसरण करें : आचार्यश्री महाश्रमण

अध्यात्म का शांतिपीठ,
२५ अप्रैल, २०२२

शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमण जी आज प्रातः हरियासर से विहार कर आचार्य महाप्रज्ञ समाधि स्थल अध्यात्म का शांतिपीठ पधारे। परम पावन ने अपने गुरु की समाधि स्थल पर आध्यात्मिक जप किया। गीत के पद्य का सुमधुर संगान किया। लगभग ८ वर्ष ४ माह पश्चात् पूज्यप्रवर का यहाँ पधारना हुआ है।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के परंपर पट्टधर ने मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए पूज्यप्रवर ने फरमाया कि शास्त्र में कहा गया है–शत्रु क्या नुकसान कर सकता है? और ज्यादा भयंकर शत्रु कौन हो सकता है? हमारी दुनिया में मित्र भी बनाए जाते हैं, तो कई शत्रु भी बन जाते हैं। सबसे बड़ा शत्रु कोई है तो वह है हमारी दुरात्मा।

आत्मा के चार प्रकार बन जाते हैं–परमात्मा, महात्मा, सद्-आत्मा और दुरात्मा। परम अवस्था को प्राप्त आत्माएँ तो परमात्मा हैं। अनंत सिद्ध मोक्ष में विराजमान हैं। वे परमात्मा है। आत्मा का दूसरा प्रकार है–महात्मा। जो साधु है, वे महात्मा है। जिनके मन, वचन और प्रवृत्ति में कायिक चेष्टा में एकरूपता-सरलता होती है। साधु तो अहिंसा का पुजारी होता है।

साधु को तो भद्र, ऋजु, सरल होना चाहिए। महात्मा वह होता है, जिसकी कथनी-करनी में विसंगति नहीं है। साधु को अवांछनीय होशियारी नहीं करनी चाहिए। आत्मा का तीसरा प्रकार है–सदात्मा। गृहवासी है, वो संन्यासी तो नहीं बन सकते। गृहस्थ जीवन में है, वे सदात्मा बने। जो सदाचार वाले सज्जन पुरुष होते हैं, वे सदात्मा होते हैं।

चौथा प्रकार है–दुरात्मा, दुष्ट आत्मा। जो दुर्जन है, वो दुरात्मा होता है। दुरात्मा के मन में कुछ, वचन में कुछ है, करता कुछ है, कोई भरोसा नहीं है। साथ में हिंसा-बेईमानी, धोखाधड़ी में ज्यादा रहता है। जो मिथ्यात्वी है, वह दुरात्मा है।

शास्त्रकार ने कहा है कि अपनी दुरात्मा बनी आत्मा जो हमारा नुकसान कर सकती है, उतना नुकसान गला काटने वाला शत्रु भी नहीं कर सकता। गला काटने वाला तो एक जीव का नुकसान कर सकता है। हमारी दुरात्मा तो कितने जन्मों को बिगाड़ सकती है। हमारी बड़ी शत्रु दुरात्मा बनी आत्मा है।

आदमी जीवन में पाप कर लेता है, धर्म नहीं करता है। बुढ़ापा आ गया, बीमारियों ने घेर लिया तब सोचता है, मैंने जिंदगी में पाप इतने किए हैं, अब मेरा क्या होगा। नरक होता है, पापी लोग नरक में जाते हैं। मेरी क्या गति होगी। हमें अंत में पश्चात्ताप न करना पड़े, इसलिए पहले से ही सदाचार जिंदगी में रहे। कदाचार, भ्रष्टाचार, अनाचार, दुराचार इनसे बचने का प्रयास होना चाहिए।

(शेष पृष्ठ ३ पर)

आचार्य श्री महाश्रमणजी

61वां जन्मदिवस : वैशाख शुक्ला 9 (10 मई, 2022)

13वां पदाभिषेक दिवस : वैशाख शुक्ला 10 (11 मई, 2022)

49वां दीक्षा दिवस (युवा दिवस):वैशाख शुक्ला 14 (15 मई, 2022)

श्रद्धावनत : तेरापंथ टाइम्स परिवार

दुर्लभ मानव जीवन मुक्ति का द्वार बन सकता है : आचार्यश्री महाश्रमण

जयसंगसर, २४ अप्रैल, २०२२

सरदारशहर के लाल और तेरापंथ के भाल आचार्यश्री महाश्रमण जी १३ किमी का विहार कर जयसंगसर के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय पधारे।

मुख्य प्रवचन में आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल देशना देते हुए फरमाया कि हमारी दुनिया में जय और पराजय की बात भी होती है। चुनाव में भी जय-पराज की बात सामने आती है। आजकल तो एक्जिट पोल से पहले ही अंदाज लगाया जा सकता है।

एक जमाने में राजतंत्र था तब राजा माँ के पेट से आता था। अब राजा वोट की पेटी से आता है। कहीं संघर्ष हो जाए तो भी जय-पराजय की बात हो जाती है। एक जय की बात अध्यात्म के क्षेत्र में भी आती है। जीतो, अपनी चेतना को जीतो। अपने मन-चित्त, अपने आपको जीतो।

जीतने की बात है, तो जीतने के लिए शक्ति भी चाहिए। पुरुषार्थ-पराक्रम भी जीतने के लिए अपेक्षित होता है। पुरुषार्थ भी सही तरीके से हो। सही दिशा में हो तो परिणाम ज्यादा अच्छा आने की संभावना बन सकती है। यह एक प्रसंग से समझाया कि ठीक जगह सही पुरुषार्थ है, तो निष्पत्ति आ सकती है।

हमारे जीवन में भी पुरुषार्थ सही जगह हो। सही समय पर पुरुषार्थ होगा तो अच्छा परिणाम आ सकता है, यह भी एक प्रसंग से समझाया कि रोग पकड़ में आ जाए तो निदान हो सकता है। आत्मा और अध्यात्म के क्षेत्र में चोट करना महत्त्वपूर्ण है। मोहनीय कर्म और कषाय पर चोट करें। राग-द्वेष, क्रोध, मान, माया, लोभ दूर हो जाएँगे तो ठीक हो जाएगा।

एक दृष्टांत से और समझाया कि राग और द्वेष हमारे दो शत्रु हैं, ये चेतना में रहते हैं, तो दुःख की बदबू आती है। राग-द्वेष या काम-क्रोध को कम करने, बचने का प्रयास करना चाहिए। राग-द्वेष कर्म के बीज हैं।

(शेष पृष्ठ २ पर)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
2 - 8 मई, 2022

✦ *व्यक्तियों के समूह से समाज का निर्माण होता है, इसलिए समाज व्यक्ति से बड़ा होता है। एक व्यक्ति के चिंतन की तुलना में समाज अथवा संगठन का चिंतन महत्त्वपूर्ण होता है।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

त्याग से आत्मशक्ति का विकास एवं चेतना निर्मल हो सकती है : आचार्यश्री महाश्रमण

बुचावास, २१ अप्रैल, २०२२

१६ वर्ष पश्चात तारानगर में प्रवास संपन्न कर महातपस्वी महाश्रमण जी १६ किलोमीटर का प्रलंब विहार कर बिडेन चिल्ड्रन एकेडमी, बुचावास पधारे।

मुख्य प्रवचन में महान परिव्राजक आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि हमारे जीवन में शक्ति का बहुत महत्त्व है। बलवान आदमी महत्त्वपूर्ण होता है। जो निर्बल होता है, कमजोर होता है, वह एक कमी होती है और वह दुःखी भी बन सकता है।

दुनिया में अनेक प्रकार के बल होते हैं। जनबल, धन बल, मन बल, वचन बल, काय बल, अनेक बल हैं। संभवतः सबसे बड़ा बल तो आत्मबल होता है। आत्मा शक्तिशाली और पवित्र है, वह बहुत बड़ा बल होता है। कवि ने बताया है कि हाथी विशालकाय प्राणी होता है, पर एक अंकुश हाथी को वश में कर लेता है। सघन अंधकार को एक छोटा सा दीपक दूर कर देता है। बहुत बड़े पहाड़ को एक वज्र चूर-चूर कर देता है। बड़ी-बड़ी चीजें छोटों के द्वारा नियंत्रित हो जाती है, उनका विनाश हो जाता है। जिसमें तेज है, वो बलवान है।

आदमी यह सोचे कि मेरे पास जो भी शक्ति है, मैं अपनी शक्ति का दुरुपयोग न करूँ। आत्म शक्ति से जुड़ा हुआ तत्त्व है, त्याग। त्याग से आत्म शक्ति बढ़ सकती है, चेतना निर्मल बन सकती है, आदमी सुखमय जीवन जी सकता है। बाह्य अनुकूलता भी हो सकती है, यह एक प्रसंग से समझाया कि त्याग से सब कुछ प्राप्त हो सकता है।

जो व्यक्ति अपने स्वार्थों को छोड़ता है, उसे शक्ति प्राप्त हो सकती है। विद्यार्थी बैठे हैं, उनमें ज्ञान के साथ अच्छे संस्कार भी आएँ। जीवन में अहिंसा, संयम, नैतिकता, नशामुक्ति आए। ज्ञान और संस्कार दोनों बढ़िया होते हैं, तो बच्चों का जीवन भी अच्छा बन सकता है।

आज बुचावास क्षेत्र के इस विद्यालय में आए हैं। यहाँ अच्छा ज्ञान चले साथ में बच्चों में अच्छे संस्कार भी आएँ। संस्कार युक्त शिक्षा का क्रम चलता रहे। अभिभावक अध्यापक, संत लोग व संचालक मंडल ध्यान रखें तो बच्चों का जीवन अच्छा हो सकता है। पूज्यप्रवर ने बच्चों को प्रेरणाएँ दिलवाई।

पूज्यप्रवर के स्वागत में बुचावास एकादमी के व्यवस्थापक बलवान तेतरवाल, जिला परिषद सदस्य विमला कासवा, चैनरूप डागा ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

पुण्यवत्ता की पृष्ठभूमि में चेतना की निर्मलता रह सकती है : आचार्यश्री महाश्रमण

जिगसाना ताल, १६ अप्रैल, २०२२

आचार्य भिक्षु के परंपर पट्टधर आचार्यश्री महाश्रमण जी आज प्रातः ११ किलोमीटर का विहार कर जिगसाना ताल के राजकीय आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय पधारे।

मुख्य प्रवचन में मानवता के महामसीहा आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि भौतिकता का संबंध पुण्यवत्ता के साथ है और आध्यात्मिकता का संबंध चेतना की निर्मलता के साथ है। पुण्यवत्ता की पृष्ठभूमि में भी चेतना की निर्मलता रह सकती है।

भगवान शांतिनाथ जैन शासन में जो वर्तमान अवसर्पिणी के इस भरत क्षेत्र में हुए हैं। वे सोलहवें तीर्थंकर हुए हैं। तीर्थंकर बनना भी बहुत उच्चासन पर विराजमान होना हो जाता है। तीर्थंकर से पहले चक्रवर्ती भी थे। भौतिक दुनिया का सबसे बड़ा आदमी चक्रवर्ती होता है।

अध्यात्म के क्षेत्र में जो अधिकृत होते हैं, स्वयं तो सबसे बड़े हैं, साथ में पुण्यवत्ता भी है, वो तीर्थंकर होते हैं। चक्रवर्ती में भौतिकता का प्राधान्य है, तीर्थंकर में आध्यात्मिकता का प्राधान्य तो है ही साथ ही तीर्थंकर नाम गौत्र की पुण्यवत्ता भी भोगते हैं। भगवान शांतिनाथ चक्रवर्ती भी हुए और तीर्थंकर भी हुए।

तिरेसठ श्लाका पुरुष बताए जाते हैं। ५४ उत्तम पुरुष बताए गए हैं। २४ तीर्थंकर, १२ चक्रवर्ती, ९ वासुदेव और नौ बलदेव। तिरेसठ श्लाका पुरुष में इन ५४ के सिवाय ९ प्रतिवासुदेव भी होते हैं। इनमें कोई-कोई व्यक्ति दो-दो पद चक्रवर्ती व तीर्थंकर पद को प्राप्त कर लेते हैं।

जो तीर्थंकर होते हैं, वो तो परमशांति में रहते हैं। उनको कोई चिंता-भय नहीं होता है। सारे के सारे शांतिनाथ हो जाते हैं। जितने भी बुद्ध-तीर्थंकर अतीत में हुए हैं। जितने भी आगे भविष्य में होंगे, उन सबका प्रतिष्ठान-आधार शांति है। वे सब शांतिमय होते हैं।

साधु के तो ज्यादा शांति रहनी चाहिए, गृहस्थ के भी शांति रहनी चाहिए। संत के शांति होती है, क्योंकि वे त्यागी होते हैं। प्रतिकूल परिस्थितियों में भी शांति रहे। खुद शांति में रहें, दूसरों को भी शांति में रहने दें। दूसरों की शांति में इरादन रूप से बाधक नहीं बनना चाहिए।

आदमी गुस्सा, लोभ, भय, चिंता से अशांति में जा सकता है। साधना से शांति रहती है। त्याग-तपस्या आत्म-रमण में रहें। साधना से सुविधा मिल सकती है। परिग्रह ज्यादा काम में नहीं आ सकता है। साधु तो राजा से भी बड़ा होता है। देवता भी उसको नमन करते हैं, जिसका मन सदा धर्म में रमा रहता है। साधु के लिए देवता वंदनीय नहीं है परंतु देवता के लिए साधु वंदनीय होते हैं।

साधु के पास जो धन है, वो किसी के पास नहीं है। उसके पास त्याग-तप और ज्ञान का धन है। कई उपासक भी ऐसे हो सकते हैं। उपासकों, गृहस्थ श्रावकों में तत्त्व-ज्ञान अच्छा हो सकता है। पर चारित्र वाला धन साधु के पास होता है। साधना धन साधु होते हैं। साधनों से सुविधा, साधना से शांति।

पुज्यवर के स्वागत में विद्यालय के प्राधानाचार्य किशन सिंह राठौड़, शिक्षक बहादुर सिंह, सरपंच धर्मवीर, तारानगर कन्या मंडल, तेरापंथ युवक परिषद, दीपिका छल्लाणी, ज्योति बरमेचा ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

दुर्लभ मानव जीवन मुक्ति का द्वार...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

हमारे अनंत जन्मों के संस्कार हैं। पुनर्जन्म का सिद्धांत है। आत्मा पहले भी कहीं थी। कितनी योनियाँ हैं। अनादिकाल से आत्मा जन्म-मरण कर रही है। ये मानव जन्म मिला है, ये द्वार बन सकता है, मुक्ति का। इस मनुष्य जन्म में तपस्या, साधना, आराधना करें तो भव पार हो सकता है, जन्म-मरण से छुटकारा मिल सकता है।

मानव जन्म को पापों में नहीं खोना चाहिए। इसका लाभ उठाना चाहिए। आदमी नैतिकता, अहिंसा, संयम व नशामुक्ति का पालन करें तो जीवन सार्थक बन सकता है। पापों से बचकर साधना करें तो मोक्ष की दिशा में आगे बढ़ सकते हैं। आज जयसंगसर आए हैं। सरदारशहर के जैसनसरिया से जुड़ा है। सबमें धर्म की भावना रहे। पूज्यप्रवर ने नशामुक्ति के संकल्प करवाए।

साध्वी पावनप्रभाजी ने पूज्यप्रवर के दर्शन किए एवं अपनी भावना अभिव्यक्त की। पूज्यप्रवर के स्वागत में भंवरलाल नखत, सरपंच केशरीमल सारण, ताराचंद सारण, विद्यालय प्राधानाचार्य मेघदान सारण ज्ञानशाला, ज्ञानशाला प्रशिक्षिका, कन्या मंडल व दीपू जैसनसरिया ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

देश भगत विश्वविद्यालय में हुआ 'अणुव्रत भवन' का उद्घाटन

अणुव्रत आंदोलन मानव को नई दिशा प्रदान करने वाला आंदोलन

मंडी गोविंदगढ़।

अणुव्रत पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए मनीषी संत मुनि विनय कुमार जी 'आलोक' ने बताया कि अणुव्रत आंदोलन मानव को नई दिशा प्रदान करने वाला आंदोलन है। अणुव्रत मानव जीवन की गूढ़तम समस्याओं का समाधान करता है। आज देश भगत विश्वविद्यालय ने अणुव्रत भवन का निर्माण कर संपूर्ण विश्व के विश्वविद्यालयों को नई राह दिखाई है। अणुव्रत संपूर्ण मानव जाति का उद्धार करने वाला आंदोलन है। मनीषी संत विनय कुमार जी 'आलोक' ने कहा कि यदि तनाव से आप मुक्त होना चाहते हैं तो अणुव्रत के छोटे-छोटे व्रतों को जीवन में अपनाने की जरूरत है।

मनीषी संत ने आगे बताया कि जल संयम, बिजली संयम और खाने में जूठन का प्रयोग न हो इन क्षेत्रों में देश भगत विश्वविद्यालय ने नए मानक प्रस्तुत किए हैं और मानव सेवा के कार्यों में आज एक और महान कार्य को जोड़ते हुए डॉ० जोरा सिंह जी ने भूमि सहित अनुमानित ५० लाख रुपयों की लागत के अणुव्रत भवन का उद्घाटन कार्यक्रम रखा और इतने अल्प समय में इतने लोग यहाँ जुटे हैं। मैं उन सभी को शुभाषीष देता हूँ। उन्होंने देश भगत परिवार को आशीर्वाद देते हुए कहा कि इससे पूर्व भी देश भगत विश्वविद्यालय में आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के नाम पर एक बड़े सेमिनार हॉल का उद्घाटन किया जा चुका है।

प्रो० चांसलर डॉ० तेजिंदर कौर ने कहा कि मनीषी संत विनय कुमार जी 'आलोक' की कृपा सदैव देश भक्त परिवार पर रही है और हम उनकी कृपा से सदैव जन-कल्याण के कार्य करते रहेंगे। वाइस चांसलर प्रोफेसर शालिनी गुप्ता ने महावीर स्वामी जी की शिक्षाओं के बारे में बताया।

संचय जैन अध्यक्ष अणुव्रत विश्व भारती ने जैन आचार्यों की परंपरा एवं अणुव्रत के बारे में बताते हुए कहा कि देश भगत विश्वविद्यालय के साथ अणुव्रत विश्व भारती कंधे-से-कंधा मिलाकर कार्य करने के लिए तैयार है।

तेरापंथ सभा, पंजाब के अध्यक्ष केवल कृष्ण गोयल ने जैन धर्म एवं आचार्यश्री के बारे में बताया। सुरेंद्र मित्तल ने कहा कि अणुव्रत से हमारा जीवन संवर जाता है।

सलिल बंसल ने इस कार्यक्रम को आयोजित करने में देश भगत विश्वविद्यालय का आभार जताया। अंत में प्रो० दीपक शांडिल्य के द्वारा अणुव्रत के बारे में बताते हुए पधारे सभी मेहमानों का आभार प्रकट किया गया। इस अवसर पर देश भगत विश्वविद्यालय के चांसलर डॉ० जोरा सिंह, प्रो० चांसलर डॉ० तेजिंदर कौर, एडवाइजर टू चांसलर डॉ० वीरेंद्र सिंह, वाइस चांसलर प्रो० शालिनी गुप्ता, रजिस्ट्रार डॉ० संजीव कालिया, प्रोफेसर्स एवं सैकड़ों छात्र-छात्राएँ उपस्थित रहे। मंच संचालन डॉ० अजयपाल सिंह ने किया।

संत समागम सौभाग्य से प्राप्त होता है

नार्थ टाउन, चेन्नई।

नार्थ टाउन जैन स्थनक में संपूर्ण जैन समाज द्वारा साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी का स्वागत किया। इस अवसर पर साध्वीश्री जी ने कहा कि हम सौभाग्यशाली हैं, जिन्हें भगवान महावीर का शासन मिला है। तीर्थंकर प्रतिनिधि स्वरूप वर्तमान में आचार्यश्री महाश्रमण जी के नेतृत्व में धर्म साधना कर रहे हैं। हमें भगवान महावीर द्वारा प्रदत्त जागरण के संदेश को आत्मसात करना है।

एस०एस० जैन संघ नार्थ टाउन के अध्यक्ष अशोक कोठारी ने कहा कि प्रबुद्ध साध्वीश्री जी की प्रेरणा से हमारा जीवन गुलजार बन जाएगा। नार्थ टाउन परिवार की ओर से अध्यक्ष संपत सेठिया ने साध्वीवृंद का स्वागत करते हुए सौम्य संगान से वातावरण को सुरम्य बना दिया। राजकरण ने अपने विचार व्यक्त किए। महिला मंडल ने स्वागत-गीत का संगान किया। साध्वी राजुलप्रभाजी ने कहा कि यहाँ सभी श्रावकों का मन श्रद्धा भक्ति से आप्लावित है।

नार्थ टाउन तेरापंथ परिवार के मंत्री पुखराज ने अपने संयोजकीय वक्तव्य में कहा कि साध्वीश्री जी ने एक सप्ताह का प्रवास प्रदान कर हम नार्थ टाउन वासियों पर कृपा की है।

हम अपने पुरखों के संदेशों और आदर्शों...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

आज परम पूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञजी की समाधि स्थल पर आए हैं। आचार्यश्री महाप्रज्ञजी का कितना लंबा समय पर्याय था। सरदारशहर में ही दीक्षा हुई थी। अंतिम महाप्रयाण स्थल भी सरदारशहर है। जन्म लेने वाला एक दिन तो अवसान को प्राप्त होता है। साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी भी पधार गए । हम पुरखों के बताए मार्ग का अनुसरण करें। निमित्त शांति में सहायक बन सकते हैं। महान व्यक्तित्व आते हैं, वे कईयों को राह दिखा देते हैं, चाह पैदा कर देते हैं। हम अध्यात्म और परम शांति की दिशा में आगे बढ़ते रहें, मंगलकामना।

समाधि स्थल पर पधारने से पूर्व आचार्यप्रवर सेठ बुधमल दुगड़, राजकीय महाविद्यालय में निर्मित ओडिटोरियम में पधारे। पूज्यप्रवर ने आशीर्वचन फरमाया कि हमारे जीवन में ज्ञान का बहुत महत्त्व है। ज्ञान के साथ अच्छे संस्कार विद्यार्थियों में पुष्ट हों। अच्छे संस्कारों से आत्मा निर्मल बनती है और दूसरों के लिए भी उपयोगी हो सकती है। पूज्यप्रवर ने सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति के संकल्पों को समझाकर स्कूल-कॉलेज के बच्चों को स्वीकार करवाए।

कॉलेज के जैनोलॉजी विभाग में पूज्यप्रवर पधारे। स्वामी विवेकानंद की मूर्ति के अनावरण स्थल पर पधारे।

बाद में भंवरलाल दुगड़ आयुर्वेद विश्व भारती के स्थल में निर्मित प्राणनाथ हॉस्पिटल में पधारे। वहाँ पर पूज्यप्रवर ने आशीर्वचन फरमाया कि चार शब्द हैं—व्याधि, आधि, उपाधि और समाधि। हम शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक बीमारी से दूर हों और समाधि में रहें। मन में शांति रहे। बीमारी है, तो चिकित्सा पद्धतियाँ भी कई हैं। प्रशिक्षण अच्छा हो तो कार्य अच्छा हो सकता है। छोटे-छोटे विद्यार्थियों को प्रेरणा देकर नशामुक्ति के संकल्प करवाए।

मुख्य नियोजिकाजी ने कहा कि विहार चर्या को ऋषि के प्रशस्त माना गया है। आचार्यप्रवर इसी परंपरा का अनुसरण कर रहे हैं। आचार्य प्रवर आज अध्यात्म के शांतिपीठ पर पधारे हैं। यह स्थान जन-जन को शांति का पाठ पढ़ा रहा है। लोग आचार्यप्रवर की अहिंसा से प्रभावित-लाभान्वित हुए है।।

पूज्यप्रवर के स्वागत में महासभा अध्यक्ष मनसुख सेठिया, आ०म० प्रवास व्यवस्था समिति अध्यक्ष बाबूलाल बोथरा, सुमतिचंद गोठी, सिद्धार्थ आंचलिया, नरेंद्र नखत, अशोक पींचा, महिला मंडल ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्रीजी के प्रति

मां के आंचल में

● साध्वी विधिप्रभा ●

मां के आंचल में, हर प्रातः दिवाली, हर बार निराली है-------।
ओ मां, ओ मां ------- ४बार

जीने की नव राह दिखाई २
मेरी खुशहाली थी वो मां तेरी शरण जो पाई
तुझसे नाता था, तुझसे वास्ता, क्यों छोड़ चली-------
यूं मां, यूं मां ---- ४बार

तेरे श्रम की, पुण्य ऋचाएं २
तुम जैसा कुशल प्रशासक, शायद सदियों में आए
शुभ्र शुभंकर है, जीवन तेरा ये, कैसे निहारूं मां
ओ मां, ओ मां ----- ४ बार

तेरे उपकार भूला ना जाए २
प्यासी अखियां तरसे हरपल, कैसे तुमको पाए
तेरे चरणों में, बीता जो हरपल, यादों में आए
ओ मां ----- ४ बार

आस्था से नित शीष झुकाऊं २
दिव्य लोक से साझ दिराओं, भक्ति थाल सजाऊं
अमर रहेगी, शासन माता, बलि-बलि जाऊं मां
ओ मां -------- ४बार

लय : तू कितनी अच्छी है----- ओ मां

गूंजे यश गाथाएँ

● साध्वी जिनप्रभा ●

शासनमाता की महिमा, किन शब्दों से गाएं
जन-जन के मन मंदिर में, गूंजे यश गाथाएं।।

जीवन था सीधा-सादा, पर कलापूर्ण सारा
हरपल जागृत बन जीया, वह सौरभ महाकाएं।।

अनुशासन कला अजब थी, कब कहना कब सहना
वह सुधास्त्राविनी वाणी, सुनने को ललचाएं।।

जो आता तव चरणों में, निज कथा व्यथा लेकर
वत्सलता भरी निगाहें, उलझन को सुलझाए।।

गुरुचरण समर्पण भारी, गुरु वचन मंत्र माना
गुरुभक्ति संघअनुरक्ति, की पावन शिक्षाएं।।

आयोजन युगप्रधान का, कैसे हम रंग भरें
दो दिव्यलोक से दृष्टि, भेजो नव रचनाएं।।

तेरी सन्निधि बिन बीता, सूना-सूना महिना
प्रभुवर भी बात-बात में, तेरी स्मृति करवाएं।।

उपकार तुम्हारे अनगिन, क्या-क्या हम बतलाएं
इस मासिक पुण्यतिथि पर, लो वंदन अर्चाएं।।

लय - प्रभु पार्श्व देव-----

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
2 - 8 मई, 2022

✦ *आदमी को अपने जीवन में अपनी संपदा और सामर्थ्य का विकास करना चाहिए।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

महिला मंडल के विविध आयोजन

रूपांतरण, जैनिज्म के द्वारा

हैदराबाद।

अभातेममं के निर्देशानुसार तेरापंथ महिला मंडल के तत्त्वावधान में डीवी कॉलोनी में रूपांतरण जैनिज्म के द्वारा विषय लेश्या पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से हुई। मंडल की बहनों द्वारा गीतिका प्रस्तुत की गई।

अध्यक्ष अनिता गीड़िया ने शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री जी को श्रद्धांजलि अर्पित की। कार्यशाला की मुख्य वक्ता प्रेम पारख रहीं और प्रेक्षा प्रशिक्षक रीता सुराणा ने लेश्या पर ध्यान करवाया।

कार्यशाला की संयोजिका सीमा नाहर ने कार्यक्रम का संचालन किया। संयोजिका मीनू संचेती का अच्छा सहयोग रहा। उपाध्यक्ष सरला मेहता, कोषाध्यक्ष शांता बैद एवं अन्य बहनों की अच्छी उपस्थिति रही। आभार ज्ञापन मंत्री श्वेता सेठिया ने किया।

मिशन उत्थान का आगाज

मीरा रोड, मुंबई।

डॉ० मुनि अभिजीत कुमार जी एवं मुनि जागृत कुमार जी के सान्निध्य में उत्थान कार्यशाला का आयोजन हुआ। महिला मंडल के मंगलाचरण के साथ वरिष्ठ श्रावक घेवरचंद सुराणा द्वारा उपस्थित सभी श्रावक समाज का स्वागत किया गया। डॉ० मुनि अभिजीत कुमार जी ने वंदना का महत्त्व बताते हुए उससे होने वाले लाभ से अवगत करवाया।

मुनि जागृत कुमार जी ने ज्ञानशाला के बच्चों को लाइफ में आने वाली कठिन परिस्थितियों में भी कैसे डील करें और कैसे पॉजिटिव रहते हुए निरंतर आगे बढ़ें, यह बताया।

सभा, तेयुप महिला मंडल, कन्या मंडल, किशोर मंडल व ज्ञानशाला सभी की अच्छी उपस्थिति रही। २१० सदस्यों की उपस्थिति रही।

उवसग्गहर स्तोत्र का अनुष्ठान

भुवनेश्वर।

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में तेमम के तत्त्वावधान में स्वस्तिक आकार में उवसग्गहर स्तोत्र का अनुष्ठान तेरापंथ भवन में आयोजित हुआ। करीबन १५० भाई-बहिनों ने जोड़े व बिना जोड़े व गणवेश के साथ भाग लिया।

इस अवसर पर मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि आत्मशुद्धि के अनेक उपायों में एक महत्त्वपूर्ण उपाय मंत्र साधना, जप साधना है। विशिष्ट अक्षरों की संयोजना का नाम मंत्र है।

मुनिश्री ने आगे कहा कि जैन धर्म में नमस्कार महामंत्र का प्रथम स्थान है तो द्वितीय स्थान उवसग्गहर स्तोत्र का है। मंत्र साधना में उच्चारण शुद्धि, एकाग्रता, नियमितता, सार्थक अर्थ का बोध होना जरूरी है। मुनि परमानंद जी, मुनि कुणाल कुमार जी आदि का भी सहयोग रहा। कार्यक्रम को सफल बनाने में महिला मंडल का विशेष योगदान रहा।

श्रीउत्सव का दो दिवसीय आयोजन

बालोतरा।

अभातेममं के निर्देशानुसार तेमम द्वारा श्रीउत्सव का दो दिवसीय आयोजन किया गया। मंत्री संगीता बोथरा ने बताया कि उद्घाटन सत्र में उद्घाटन विशिष्ट अतिथि सुमन बुंदेला, पूर्व नगरपरिषद चेयरमैन प्रभा सिंघवी अभातेममं राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्या एवं मारवाड़ क्षेत्र प्रभारी सारिका बागरेचा, अभातेममं राष्ट्रीय सदस्या विनीता बैंगाणी द्वारा रिबन खोलकर किया गया।

अध्यक्षा निर्मला संकलेचा ने सभी अतिथियों का स्वागत किया। श्रीउत्सव में लघु स्तर पर काम करने वाले स्टॉलों को प्राथमिकता दी गई। कुल ३१ स्टॉल लगाए गए। कोषाध्यक्ष उर्मिला सालेचा ने महिला मंडल की गतिविधियों के बारे में जानकारी प्रस्तुत की।

पूर्व चेयरमैन रतन खत्री और तेरापंथ सभा अध्यक्ष ने महिला मंडल के इस कार्यक्रम की प्रशंसा की। इस अवसर पर तेरापंथ सिवांची-मालाणी अध्यक्ष नेमीचंद चोपड़ा, लघु उद्योग मंडल के अध्यक्ष जसवंत गोगड़, ओसवाल समाज के मंत्री महेंद्र वैदमूथा और स्थानकवासी, इनरव्हील क्लब महेश्वरी समाज, वी ब्लाक, जेसीआई और जैन सोशल ग्रुप आदि अनेक संस्थाओं के अध्यक्ष और मंत्री उपस्थित थे। कार्यक्रम में पदाधिकारीगण एवं सदस्यों की उपस्थिति रही।

कार्यक्रम के प्रायोजक का लाभ नरेश कंकू चोपड़ा और सुरेश वेद मेहता ने लिया। सभी अतिथियों का महिला मंडल के द्वारा सम्मान किया गया। आभार ज्ञापन सहमंत्री रेखा बालड़ एवं कार्यक्रम का संचालन मंत्री संगीता बोथरा ने किया।

इंस्पीरेशन एवं सी स्पीक्स कार्यक्रम

राजाराजेश्वरी नगर।

अभातेममं द्वारा निर्देशित इंस्पीरेशन और सी स्पीक्स कार्यक्रम का आयोजन तेममं द्वारा किया गया। महासती सरदाराजी पर आधारित काव्य नाटक का मंचन और स्वयं के कामयाबी की कहानी चारू लता ओस्तवाल द्वारा रखी गई।

वरिष्ठ उपाध्यक्ष सुमन पटावरी ने नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए सभी का स्वागत किया। मंडल की बहनों द्वारा प्रेरणा गीत के संगान से मंगलाचरण हुआ। महासती सरदाराजी के प्रेरणामय जीवन चित्र पर काव्य नाटक की प्रस्तुति मंडल की बहनों ने की। काव्य नाटक की संयोजना सरोज बैद, कंचन छाजेड़, शारदा बैद ने की।

चारुलता ने अपनी संघर्ष सफलता तक की कहानी उपस्थित बहनों को बताई। चारुलता का परिचय दिया दीपाली गोलछा ने। सम्मान मंडल की बहनों द्वारा दिया गया। मंत्री सीमा छाजेड़ ने सभी का आभार प्रकट किया। कार्यक्रम का संचालन दीपिका देरासरिया ने किया। इस अवसर पर मंडल के उपाध्यक्ष शोभा बोथरा सहमंत्री मंजु बोथरा, वंदना भंसाली, हेमलता सुराणा, पूनम दक आदि बहनें उपस्थित थी।

लेश्या कार्यशाला का आयोजन

भीलवाड़ा।

अभातेममं के तत्त्वावधान में तेमम द्वारा मुनि पारस कुमार जी के सान्निध्य में शुभ लेश्या और सही रंग-सीखों जीवन जीने का सही ढंग कार्यशाला का आयोजन किया गया।

कार्यशाला का शुभारंभ मुनिद्वय के नमस्कार महामंत्र एवं प्रज्ञा जोन की बहनों के प्रेरणा गीत के संगान से हुआ। मुनि पारस कुमार जी ने छः लेश्या के बारे मे बताया। मुनि शांतिप्रिय ने लेश्या और रंगों के बारे में बताया।

तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्षा मीना बाबेल ने समागत बहनों का स्वागत किया। मीडिया प्रभारी नीलम लोढ़ा ने बताया कि कार्यशाला में शुभ्रता अशुभ्रता लिए लेश्या के छः कलर को प्रज्ञा जोन की बहनें—अंजना रांका, अनिता हिंगड़, चंदा बाबेल, आशा भलावत, पिंकी सिरोहिया, मोनिका रांका, सुधा चपलोत ने नाटिका द्वारा समझाने का प्रयास किया। कार्यशाला का संचालन एवं आभार मंत्री रेणु चोरड़िया ने किया।

रूपांतरण कार्यशाला

बारडोली।

अभातेममं के तत्त्वावधान में तेमम द्वारा लेश्या व ध्यान पर आधारित कार्यशाला का आयोजन किया गया। नमस्कार महामंत्र व प्रेरणा गीत के संगान के साथ कार्यक्रम की शुरुआत की गई। उपासिका प्रेरणा बाफना ने शुभ और अशुभ लेश्या के विषय में जामुन के पेड़ के दृष्टांत के माध्यम से समझाया। मीना मेहता ने रंगों पर आधारित विभिन्न केंद्रों पर ध्यान करवाया।

चेतना पितलिया ने Colour therapy के बारे में बताया। धर्मिष्ठा मेहता एवं सीमा बाफना ने ध्यान पर आधारित एक गीतिका का संगान किया व ध्यान के चार प्रकार के बारे में विवेचन किया। मीना मेहता ने पुरानी ढालों के पुनरावर्तन के अंतर्गत गीतिका का संगान किया। कार्यशाला में सभी बहनों ने उत्साह से भाग लिया। कार्यशाला का संचालन मंत्री धर्मिष्ठा मेहता ने किया।

स्नेहम प्रोजेक्ट

अहमदाबाद।

अभातेममं के तत्त्वावधान में तेमम को स्नेहम प्रोजेक्ट के अंतर्गत मूक बधिर शाला सोसायटी में पहुँचे एवं ८ बच्चों के लिए कान की ८ हियरिंग मशीन दी। स्कूल की प्रिंसिपल मीना बेन ने मंडल की प्रशंसा की।

कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के द्वारा किया गया। कार्यक्रम में गरिमामय उपस्थिति रही। अभातेममं कार्यकारिणी सदस्य अदिति सेखानी एवं विशाखा दफ्तरी की रही। महिला मंडल अध्यक्ष चांद छाजेड़ ने सभी का स्वागत करते हुए महिला मंडल के कार्यों की जानकारी प्रदान की। मंत्री अनिता कोठारी ने अपने विचार रखते हुए सभी का धन्यवाद किया।

मंडल के पदाधिकारी उपाध्यक्ष सुशीला खतंग, प्रचार-प्रसार मंत्री सरिता लोढ़ा, पूर्व अध्यक्ष लीला सुराणा, रेखा कोठारी, मीना कोठारी, सुमन कोठारी, प्रतीक्षा सूतरिया, रेखा धूपिया, अंजु दुगड़, रजनी बैद, कन्या मंडल संयोजिका श्रद्धा धूपिया, पूजा भंसाली आदि की उपस्थिति रही। वीनस हियरिंग एंड सेंटर के प्रमुख मनीष भाई की गरिमामयी उपस्थिति रही।

रूपांतरण शिल्पशाला

अमराईवाड़ी।

अभातेममं के निर्देशन में तेमम द्वारा रूपांतरण थ्रू जैनिज्म शिल्पशाला विषय ध्यान का आयोजन तेरापंथ भवन में किया गया। कार्यक्रम का दो चरणों में आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत उपासिका मंजु गेलड़ा ने नमस्कार महामंत्र से की। महिला मंडल की बहनों द्वारा मंगलाचरण किया गया।

अध्यक्षा संगीता सिंघवी ने सभी का स्वागत किया और ध्यान विषय पर अपने विचार व्यक्त किए। प्रथम चरण में शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी की स्मृति में नमस्कार महामंत्र का जाप किया गया।

मुख्य वक्ता उपासिका मंजु देवी गेलड़ा ने केंद्र के द्वारा निर्देशित विषय ध्यान क्या है, ध्यान क्यों करना चाहिए बताया। कार्यशाला का संचालन कन्या मंडल प्रभारी रितिका गेलड़ा ने किया एवं आभार ज्ञापन उपाध्यक्ष लक्ष्मी सिसोदिया ने किया।

पुरानी गीतिका और ढालों का पुनरावर्तन कार्यशाला

विजयनगर।

अभातेममं के निर्देशानुसार तेमम द्वारा पुरानी ढालों का पुनरावर्तन कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ सभा भवन में किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ बहनों द्वारा नमस्कार महामंत्र एवं प्रेरणा गीत के संगान द्वारा किया गया। बहनों का स्वागत उपाध्यक्ष महिमा पटावरी ने वक्तव्य द्वारा किया। उन्होंने कहा—पुरानी ढालों का संगान तथा कंठस्थ करने का सतत प्रयास करना चाहिए। बरखा ने 'कर्मों की सज्झाय' ढाल का विवेचन किया।

कार्यक्रम का संचालन सुमन कोठारी एवं आभार ज्ञापन मंडल की मंत्री सुमित्रा बरड़िया ने किया। कार्यक्रम में अभातेममं की पूर्व महामंत्री वीणा बैद, कर्नाटक प्रभारी मधु कटारिया, पूर्व अध्यक्ष कुसुम डांगी तथा सभी पदाधिकारी बहनें उपस्थित रहीं। कार्यक्रम में लगभग ६० बहनों की उपस्थिति रही।

भगवान महावीर जन्म कल्याणक के आयोजन

भगवान महावीर ने अनेकांत दर्शन का सूत्रपात किया

जोधपुर।

शासनश्री साध्वी कुंथुश्री जी के सान्निध्य में एवं तेरापंथ सभा, जोधपुर के तत्त्वावधान में भगवान महावीर का २६२१वाँ जन्म कल्याणक दिवस का आयोजन तातेड़ भवन में किया गया।

साध्वीश्री जी के मंत्रोच्चार से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। मंगलाचरण मंजु सुराणा एवं संगीता तातेड़ ने किया।

साध्वी कुंथुश्री जी ने कहा कि जब-जब भारत वसुंधरा पर नैतिकता का चिराग टिमटिमाने लगता है तब उनमें स्नेह संजोने हेतु महापुरुष अवतरित होते हैं।

भगवान महावीर ने उस समय विश्व के परिताप को दूर करने के लिए अकारत्रयी की दिव्य देशना दी। मन के वैर भाव को मिटाने के लिए अहिंसा का दर्शन दिया। भगवान महावीर ने अनेकांत दर्शन का सूत्रपात किया। आज समाज में जितने झगड़े हैं, विवाद हैं, उनका कारण है आग्रहवाद, एकांतवाद, अनेकांत के प्रयोग से सापेक्षता समन्वय के प्रयोग से इन समस्याओं का समाधान किया जा सकता है। हम भगवान महावीर की पूजा करते हैं, स्तुति करते हैं, प्रशंसा करते हैं, उनकी आज्ञा को शिरोधार्य करें। उनके पदचिह्नों पर चलें, उनकी बात को मानकर चलें, शब्दों को संदेश नहीं, जीवन को संदेश बनाएँ।

साध्वी कंचनरेखाजी, साध्वी सुमंगलाश्री जी ने अपने विचारों की अभिव्यक्ति दी। साध्वी सुलभयशा जी एवं साध्वी अपूर्वयशाजी ने सुमधुर गीत का संगान किया।

नव दीक्षित साध्वी शिक्षाप्रभाजी ने गीत प्रस्तुत किया। महिला मंडल संरक्षिका आशा संघवी, सुधा भंसाली, जोधपुर सभाध्यक्ष धनपत मेहता आदि ने भगवान महावीर के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की। कार्यक्रम का संचालन मंत्री महेंद्र सुराणा ने किया।

भगवान महावीर के सिद्धांत कल्याणकारी

विजयनगरम्।

आंध्र प्रदेश के विजयनगरम् शहर में भगवान महावीर जन्म कल्याणक समारोह का आयोजन मुनि दीप कुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथी सभा द्वारा महावीर जैन भवन में आयोजित किया गया।

मुनि दीप कुमार जी ने कहा कि विश्व में अनेक व्यक्ति प्रतिदिन जन्म लेते हैं, पर सबकी जयंतियाँ नहीं मनाई जाती। जयंतियाँ उनकी मनाई जाती है जो अंधकार में निमग्न संसार को सत्य का प्रकाश दिखाते हैं। उनका दिमाग कूप मंडुक नहीं होता, विशाल सागर के समान होता है। भगवान महावीर ऐसे ही महापुरुष थे। वे विश्व के क्षितिज पर दिवाकर बनकर उदित हुए थे। उन्होंने अपनी दिव्य ज्ञान रश्मियों में अंधविश्वासों का तिमिर जाल नष्ट कर दिया। मुनिश्री ने कहा कि भगवान महावीर के सिद्धांत बहुत कल्याणकारी और प्रासंगिक हैं।

बाल मुनि काव्य कुमार जी ने कहा कि भगवान महावीर ने जन-जन का उद्धार किया। हिंसक लोगों को अहिंसा का मार्ग दिखाया।

कार्यक्रम में स्थानकवासी संघ के अध्यक्ष शांतिलाल पारख, मूर्तिपूजक संघ के अध्यक्ष बसंत कोठारी, श्री जैन श्वेतांबर तेरांपथी सभा, विजयनगरम् के अध्यक्ष प्रवीण आंचलिया, तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्षा रीटा आंचलिया एवं तेयुप के अध्यक्ष राकेश सेठिया ने वक्तव्य दिया। तेमम, विजयनगरम्, विशाखापटनम् ने अलग-अलग गीतों का संगान किया। कुसुमदेवी छाजेड़, रणजीत खटेड़ आदि ने अपने विचार प्रकट किए।

तेरापंथ कन्या मंडल ने गीत का संगान किया। कार्यक्रम का संचालन बाबूलाल चिंडालिया ने किया। कार्यक्रम में विशाखापटनम् के श्रावक भी उपस्थित रहे।

महावीर के सिद्धांत विचार और व्यवहार में हों

नोखा।

वर्तमान युग में महावीर के सिद्धांत सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह, अनेकांत और अधिक प्रासंगिक हैं। उनके सिद्धांत विचारों में व्यवहार में आने चाहिए। मात्र भाषणों में नहीं, व्यवहार व आचरणों में संयम, साधना का समावेश होना आवश्यक है। यह उद्गार शासन गौरव बहुश्रुत साध्वी राजीमती जी ने भगवान महावीर जन्म कल्याणक पर तेरापंथ भवन में रखे।

तेमम ने मंगल गीत की प्रस्तुति दी। ज्ञानशाला के नन्हे बच्चों ने 'जन्म जीवन झांकी महावीर का जन्म हमें मिलेगी मिठाईयां' चित्रण किया। कन्या मंडल की कन्याओं ने सुंदर प्रस्तुति दी।

साध्वी पल्लवप्रभाजी, साध्वी पुलकितयशा जी और साध्वी समताश्री जी ने महावीर प्रभु को कष्ट सहिष्णु और तारण-तरण जहाज बताया।

सभा मंत्री इंदरचंद बैद, सहमंत्री सुनील बैद, धारा लुणावत, बालक गौरव, आयुष मालू, हर्षित भूरा, जयश्री पारख ने भगवान महावीर की करुणा, दया, सेवा, सहिष्णुता और तीर्थंकर केवली के प्रति भाव रखे।

कन्या मंडल की सुंदर प्रस्तुति पर तेरांपथ सभा द्वारा १४ कन्याओं को मोमेंटो भेंट सभा अध्यक्ष हनुमानमल ललवाणी, तेयुप अध्यक्ष रूपचंद बैद, महिला मंडल अध्यक्षा मंजु बैद, संरक्षक मांगीलाल संचेती ने सम्मानित किया। कार्यक्रम का संचालन जयश्री पारख ने किया।

नशामुक्ति होने वाले अध्यापकों के लिए कार्यक्रम

नाथद्वारा।

सेंटमीरा बी०एड० कॉलेज जाम्बू तालाब नाथद्वारा में नशामुक्ति पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें मुनि संबोध कुमार जी, मेधांश के सान्निध्य में BEd कॉलेज के भावी अध्यापकों को नशामुक्ति का संदेश देने के लिए कार्यक्रम रखा, जिसमें अध्यक्षता अणुव्रत विश्व भारती, राजसमंद के अध्यक्ष संजय जैन तथा उपाध्यक्ष अशोक डूंगरवाल तथा नाथद्वारा के अणुव्रत कार्यकर्ता एवं महिलाओं की उपस्थिति रही।

कार्यक्रम का प्रारंभ अणुव्रत समिति की महिलाओं के अणुव्रत गीत के द्वारा किया गया। इस कार्यक्रम में कवि लोगों ने अपनी काव्यात्मक रचनाएँ प्रस्तुत की। संयोजन अणुव्रत समिति के अध्यक्ष साबिर शुक्रिया के द्वारा किया गया। मुनिश्री के द्वारा भावी अध्यापकों को प्रेक्षाध्यान के प्रयोग और उनसे होने वाले लाभ, जीवन-विज्ञान की उपयोगिता व नशामुक्ति के संकल्प करवाए गए।

संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन जैन विधि - अमूल्य निधि

नामकरण संस्कार

सूरत।

श्रीडूंगरगढ़ निवासी, सूरत प्रवासी जसवंत कुमार बुच्चा के सुपुत्र अरिहंत-विनी बुच्चा के प्रांगण में कन्या का जन्म हुआ जिसका नामकरण संस्कार जैन विधि से संस्कारक मनीष कुमार मालू ने संपूर्ण विधि व मंगलमंत्रोच्चार से संपन्न करवाया।

संस्कारक की प्रेरणा से सभी ने त्याग-प्रत्याख्यान किया। इस कार्यक्रम को संपादित करवाने में नवनीत नांदरेचा की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। तेयुप की ओर से नामकरण पत्रक व मंगलभावना पत्रक भेंट किया गया।

नामकरण संस्कार

सूरत।

लाडनूं निवासी, सूरत प्रवासी विनोद कोचर के सुपुत्र कीर्ति-सविता कोचर के प्रांगण में कन्या का जन्म हुआ, जिसका नामकरण संस्कार जैन संस्कार विधि से संस्कारक विजयकांत खटेड़, विनीत सामसुखा ने संपूर्ण विधि व मंगलमंत्रोच्चार से संपन्न करवाया।

तेयुप, सूरत की ओर से नामकरण पत्रक व मंगलभावना पत्रक भेंट किया गया।

नामकरण संस्कार

गंगाशहर।

उदयरामसर निवासी, नवरतन सिपानी के सुपुत्र एवं पुत्रवधू सिद्धार्थ-प्रियंका के नवजात पुत्र का नामकरण संस्कार जैन संस्कार विधि से हुआ। कार्यक्रम में अभातेयुप संस्कारक रतनलाल छलाणी और देवेंद्र डागा ने विधिपूर्वक मंत्रोच्चार सहित जैन संस्कार विधि से नामकरण संपन्न करवाया।

संस्कारकों द्वारा सिपानी परिवार को शुभकामनाएँ प्रेषित की गई। इस अवसर पर समाज के गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थित रही।

नामकरण संस्कार

रायपुर।

राजकुमार बैद के सुपुत्र आशीष-पुत्रवधू नम्रता की कन्या का नामकरण संस्कार जैन संस्कार विधि से संस्कारक अनिल दुगड़ द्वारा संपूर्ण विधिपूर्वक मंत्रोच्चार द्वारा संपन्न करवाया गया।

तेयुप कोषाध्यक्ष किशोर जैन ने बैद परिवार के साथ उपस्थितजनों एवं संस्कारक के प्रति आभार व्यक्त किया। संस्कार विधि में अरुण सिपानी, विवेक बैद, अरिहंत बैद, तेयुप सदस्यों की उपस्थिति रही।

नूतन गृह प्रवेश

अहमदाबाद।

निर्मल कुमार सुराणा के नूतन गृह संस्कारक अरुण बैद, विक्रम दुगड़ एवं आनंद बोथरा ने समवेत मांगलिक मंत्रोच्चार के साथ मंगलभावना पत्रक स्थापित कर संपादित किया। सहमंत्री गौतम बरड़िया ने अपनी भावनाएँ व्यक्त की।

परिषद की ओर से सुराणा परिवार को मंगलभावना पत्रक की भेंट दी गई। सुराणा परिवार की ओर से संतोष सुराणा ने तेयुप एवं संस्कारकों के प्रति आभार ज्ञापित किया।

नामकरण संस्कार एवं स्वर्ण सीढ़ी आरोहण

अहमदाबाद।

तारादेवी भंसाली के पड़पोते, कांतादेवी दुगड़ के पड़दोहेते, रमेश एवं सुनिता भंसाली के सुपौत्र, पंकज एवं प्रेरणा भंसाली के सुपुत्र का नामकरण एवं स्वर्ण सीढ़ी आरोहण का कार्यक्रम जैन संस्कार विधि से संस्कारक विक्रम दुगड़ ने मांगलिक मंत्रोच्चार द्वारा संपादित करवाया।

तेयुप उपाध्यक्ष पंकज घीया ने भंसाली परिवार को बधाई प्रेषित की। परिषद की ओर से भंसाली परिवार को मंगलभावना पत्रक की भेंट की गई। रमेश भंसाली ने परिषद के प्रति आभार ज्ञापित किया।

✦ *किसी भी जाति, वर्ग, संप्रदाय का व्यक्ति हो, यहाँ तक कि नास्तिक भी क्यों न हो, अणुव्रत का द्वार सबके लिए खुला है।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी के प्रति काव्यांजलि

महाश्रमणी अष्टकम

● **साध्वी उदितयशा** ●

जन्मस्थली लषति लाडनुपुण्य भूमि,
बैदः कुलं समुदितं मनितं पवित्रम्।
तातस्तु सूरजमलो जनयित्री छोटी,
साध्वी शिरोमणि महाश्रमणी प्रमुख्या।।

(कांता कृपारसमृता कनकप्रभाऽस्ति।।)
(विख्यातविश्वजननी कनकप्रभाऽस्ति।।)

नाम्ना कला करकलामयजीवनञ्च,
कर्तृत्त्वकौशलमहो कमनीयमग्र्यम्।
व्यक्तित्त्ववैभवमल्पमनुत्तरञ्च,
साध्वी शिरोमणिमहाश्रमणी प्रमुख्या।।

बाल्येऽपि या स्थिरमना ननु जागरूका,
मान्या मता मृदुवचा मधुरस्वभावा।
भाग्यान्विता श्रमयुता विशदा विशिष्टा,
साध्वी शिरोमणिमहाश्रमणी प्रमुख्या।।

स्वान्ताश्रये समुदितोऽपि विरागभावः,
दीक्षा श्रितार्यतुलसी गणिनः समीपे।
तेरापथद्विशतवत्सरपुण्य वारे,
साध्वीशिरोमणि महाश्रमणी प्रमुख्या।।

आराध्यदृष्टिमाखिलामनुपाल्य नित्यं,
आराध्यचित्तसदने विहितो निवासः।
आराध्यपाद युग पूर्ण समर्पितात्मा,
साध्वी शिरोमणिमहाश्रमणी प्रमुख्या।।

पुष्टा सदा गुरुकृपामृतपोषणेन,
शिष्टा स्वयं सुनिपुणात्मिकशासनेन।
जुष्टा तथा सकलसद्गुण संचयेन,
साध्वी शिरोमणिमहाश्रमणी प्रमुख्या।।

लीना निजात्मनि तथा व्यवहारदक्षा,
स्नेहान्विताऽपि कुशला त्वमुशासने च।
स्थित्वा विकासशिखरेऽपि नता गभीरा,
साध्वी शिरोमणिमहाश्रमणी प्रमुख्या।।

दुर्गास्ति या विमलदुर्लभ शक्तिरूपा,
लक्ष्मीर्वरा सकलवाञ्छितासिद्धिरूपा।
बाह्मीव भाति शुभशास्त्रनिधिस्वरूपा,
साध्वी शिरोमणिमहाश्रमणी प्रमुख्या।।

✦ *श्रावक बारहव्रतों को स्वीकार करें तो कुछ अंशों में संयम जीवन में आ जाएगा।*

✦ *सम्यक्त्व की प्राप्ति बहुत बड़ी उपलब्धि होती है। दुनिया में अनेक रत्न प्राप्त हो सकते हैं, किंतु सम्यक्त्व के समान दूसरा कोई रत्न नहीं होता।*

– आचार्यश्री महाश्रमण

हो सतिवर!

● **मुनि जिनेश कुमार** ●

सतिवर! जुग-जुग रहोला गण में गाजता।
सुण सुरंगा री बातां हुयो नहीं विश्वास।।ध्रुव।।

सतिवर! चंदन बाला ज्यू गण में ओ पता।
थास्यूं सतियां पायो पूनम रो उजास।। हो सतिवर।

सतिवर! भैक्षवशासन दीपायो सांतरों,
घोरी गरिमा महिमा जग में अपरंपार।। हो सतिवर!
शासनमाता ने पा संघ हुयो गुलजार।। हो सतिवर---

सतिवर! नारी उत्थान कियो थे संघ में आभारी,
नर नारी करसी थांरो जाप।। हो सतिवर।

सतिवर! पंचामृत थारी ऊँची साधना,
थांरी सन्निधि स्यूं धुल जाता सब पाप।। हो सतिवर।

सतिवर! लक्ष्मी माँ सरस्वती रा रूप हा,
थोरी लेखन शैली शासन में सिणगार।। हो सतिवर।

सतिवर! संयम जीवन हो लम्बो आपरो,
साध्वीप्रमुखा पद पर अर्धसदी सुखकार।। हो सतिवर।

सतिवर! मंगलमय मनडे री है भावना,
स्वर्गा बैठा-बैठा करज्यो संघ री सेव।। हो सतिवर।

सतिवर! जयवंतो फलतों शासण आपणो,
ध्यान रखावै गण रो महाश्रमण स्वमेव।। हो सतिवर---

गौरव गाथा गावां हां

● **शासनश्री साध्वी सुव्रतां** ●

शासनमाता रे शासनमाता रे
चरणां में शत्-शत् शीष झुकावां हां।

कलकत्ता महानगरी में थे शुभ मुहुरत में जन्म लियो
तुलसी मुख स्यूं दीक्षा लेकर जीवन सफल कियो।

संस्कृत प्राकृत में पारंगत प्रवचन पटुता प्राप्त करी।
ज्ञान ध्यान में लीन रहा थे कनक कसौटी स्यूं निखरी।

देश विदेशां में विचरया थे शासन ने चमकायो है
तेरापंथ रो गौरव शिखरां खूब चढ़ायो है।

वृद्धावस्था भीषण व्याधि सबल मनोबल हो थांरो
कर्म निर्जरा लक्ष्य बणायो भार उतारयो कर्मा रो।

पांच दशक तक संघ सुरक्षा और शासना सुखकारी
जागरूक बण आप कराई शासन रखवारी।

गुरु चरणां री सन्निधि में थे जीवन नैया ने तारी
राजधानी में रंग अनूठो लागी रचना मनहारी।

धन्य-धन्य हे शासनमाता बलिहारी म्हे जावां हां
युगो-युगों तक याद करांला गौरव गाथा गावां हां।

तर्ज-होली खेलो रे----

साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी की स्मृति सभा के आयोजन

गुडियातम

साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी की स्मृति सभा के तत्त्वावधान में मुनि अर्हत् कुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथ सभा भवन में मनाई गई। मुनि अर्हत् कुमार जी ने कहा कि जन्म लेना बड़ी बात नहीं, जन्म सभी लेते हैं, पर कुछ व्यक्ति अपने करिश्मे से संसार में अमिट छाप छोड़ जाते हैं। इतिहास वही रचाता है जिसका हर कदम करिश्माई होता है, जिसका चिंतन नूतनता लिए होता है। ऐसा ही एक व्यक्तित्व निखरकर आया साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी के रूप में।

मुनि भरत कुमार जी ने कहा कि साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी जिनका जीवन एक बोलता जीवन है, आदर्श जीवन है, वह साध्वी समाज का कोहिनूर थी। शक्ति और भक्ति का अद्भुत संगम थी। मुनि जयदीप कुमार जी ने मुनिश्री द्वारा शासनमाता पर गीत का संगान किया। कार्यक्रम का संचालन मानमल नाहर ने किया।

कार्यक्रम के दूसरे सत्र में तेरापंथ महिला मंडल ने गीत एवं दीपक आच्छा ने कविता द्वारा शासनमाता को भावांजलि दी। साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी को श्रद्धांजलि के रूप में सभा में चार लोगस्स का ध्यान किया गया। संचालन मुनि भरत कुमार जी ने किया।

सूरत

साध्वी लब्धिश्री जी के सान्निध्य में साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी की स्मृति सभा का आयोजन तेरापंथ भवन, सिटीलाइट में तेरापंथी सभा के तत्त्वावधान में हुआ। जिसमें गुजरात राज्य के गृहमंत्री हर्ष संघवी भी उपस्थित रहे।

इस अवसर पर साध्वी लब्धिश्री जी ने कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ के इतिहास में शासनमाता अलंकरण प्राप्त करने वाली महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी का जीवन चिरकाल तक हमें प्रेरणा देता रहेगा।

साध्वी हेमजी ने कहा कि साध्वीप्रमुखाजी समग्र धर्मसंघ की माता थी। उन्होंने गण का गौरव बढ़ाया और शासन की सौरभ फैलाई।

साध्वी आराधनाश्री जी ने कहा कि साध्वीप्रमुखाश्री का वात्सल्य प्रत्येक को आनंद से सराबोर करता था। साध्वी जिज्ञासाप्रभाजी एवं साध्वी आलोकप्रभाजी ने भी शाब्दिक भावांजलि अर्पित की।

राज्यगृह मंत्री हर्ष संघवी ने कहा कि साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी ने तेरापंथ धर्मसंघ के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। तेरापंथी सभा सूरत के अध्यक्ष हरीश कावड़िया ने साध्वीप्रमुखाश्री जी का गुणानुवाद किया। डॉ० निर्मल चोरड़िया, महासभा सहमंत्री अनिल चंडालिया, अणुव्रत महासमिति के पूर्व अध्यक्ष डालचंद कोठारी, चंपक भाई मेहता, बाबू भाई पटेल, अर्जुन मेड़तवाल, उपाध्यक्ष गौतम बाफना, महिला मंडल अध्यक्षा राखी बैद आदि ने भी श्रद्धांजलि अर्पित की। उधना भजन मंडली ने श्रद्धांजलि गीत का संगान किया। कार्यक्रम का संचालन तेयुप मंत्री अभिनंदन गादिया ने किया।

आरकोणम

तेरापंथ सभा के तत्त्वावधान में तेरापंथ सभा भवन में असाधारण साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी की गुणानुवाद सभा का आयोजन किया गया। नमस्कार महामंत्र के सामुहिक जाप से स्मृति सभा का शुभारंभ हुआ। इस अवसर पर आरकोणम तेरापंथ सभा, तेयुप, तेममं, ज्ञानशाला के सभी श्रद्धालु सदस्यों ने भाग लिया।

तेरापंथ सभा मंत्री संजय देवड़ा, महिला मंडल मंत्री संगीता देवड़ा, तेयुप अध्यक्ष हेमंत सिसोदिया इत्यादि ने शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी के प्रति अपने विचारों, कविता, गीत के माध्यम से श्रद्धांजलि अर्पित की। भिक्षु भजन मंडली ने गीतिकाओं के द्वारा जीवन चित्र को प्रस्तुत करते हुए भावांजलि समर्पित की।

शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी के प्रति आध्यात्मिक उद्गार एवं काव्यांजलि

धरें हम शासन माँ का ध्यान

● साध्वी मैत्रीप्रभा ●

धरें हम शासन माँ का ध्यान।
शासनमाता तुम थी गण की आन, बान और शान।

संघ-सीप की थी तुम मोती।
संघ दीप की थी तुम ज्योति।
शासनमाता तुम इकलौती।
सदा बढ़ाया सतिशेखरे, शासन का सम्मान।।

व्यक्तित्व तुम्हारा था तेजस्वी।
कर्तृत्व तुम्हारा महायशस्वी।
वर्चस्वी तुम, थी ओजस्वी।
चरण-शरण में जो भी आया पाया उसने प्राण।।

याद करेगी दुनिया सारी।
कहाँ ढूँढ़े वो मूरत प्यारी।
जाएँ हम तेरी बलिहारी।
गण का हम सब मान बढ़ाएँ, दो ऐसा वरदान।।

एक बार तो दर्शन दे दो।
मन की पीड़ा को तुम हर दो।
खुशियों से अब झोली भर दो।
श्रद्धांजलि हम देते तुमको नत है तन-मन प्राण।।

लय : निहारा तुमको---

अर्हम

● साध्वी प्रणतिप्रभा, साध्वी प्रवीणप्रभा, साध्वी रोहिणीप्रभा, साध्वी सिद्धांतप्रभा ●

क्यूं छोड़ पधार्‌या शासन माँ
शासन माँ म्हारै मन बसिया रे, म्हारै मन बसिया
वत्सलता अनपार रे,
पल-पल आसी याद रे,
कुण होसी तुम सम ओर रे।।

अंतर मन में प्यास घणी रे, दर्शन करां तिहां आय रे।
मन मंदिर सूनो बणियो रे, कुण रखसी माथै हाथ रे।।

निर्मल आभा अलबेली रे, मिलती शांति अपार रे।
स्वाध्याय में तल्लीन सदा रे, देता सीख हर बार रे।।

अंगुलियाँ स्फुरणा रहती रे, अणचक रुकिया बै हाथ रे।
ध्यान धर्‌यो खिण-खिण गण रो, गौण कर्‌यो अन पान रे।।

स्नेहिल दृष्टि देखंता रे, दौड्‌या म्हैं आता दिन रात रे।
कर मुष्ठि मुखडो धरता रे, निरखण तरसै ए नैण रे।।

इती भी जल्दी क्यूं कर दी थे, कांई मन में बात रे।
प्रमुखाश्री जी, टाबरियां री आवाज रे।।

लय : कुंवर थांस्यो मन लाग्यो---

अनुपमेय कृति

● साध्वी पीयूषप्रभा ●

आचार्य तुलसी की अनुपमेय कृति साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा असाधारण विशेषताओं की पुंज थी। संयम जीवन की यात्रा का शुभारंभ कर आपने अपने उज्ज्वल भविष्य की सर्जना की। गुरु भक्ति, संघ भक्ति और आत्म भक्ति से भावित आपका जीवन आचार्य तुलसी की पैनी नजरों से छिपा नहीं रहा। उन्होंने आपको गंगाशहर की पावन भूमि पर साध्वीप्रमुखा के रूप में मनोनीत कर एक नए इतिहास का निर्माण किया। निस्पृहता निरभिमानिता और निष्कांकिता की त्रयी से समन्वित व्यक्तित्व सभी के लिए आकर्षण का केंद्र बन गया। जहाँ तेरापंथ के विशाल साध्वी समाज को आपने शिक्षा, साधना और संघीय संस्कारों से संपुष्ट बनाने में अपने बहुमूल्य क्षणों को समर्पित किया, वहीं ज्ञानाराधना के क्षेत्र में सभी के लिए प्रेरणा प्रदीप बनकर बाती में तेल भरती रही। ब्रह्ममुहूर्त में स्वाध्याय की स्वर लहरियाँ आज भी कानों से गुंजायमान हो रही है। महाश्रमणी, संघ-निदेशिका, असाधारण साध्वीप्रमुखा एवं शासनमाता जैसे वजनी संबोधन प्राप्त करना आपके धीर-गंभीर व्यक्तित्व एवं कुशल नेतृत्व का ही सुपरिणाम है।

उपशम की साधना में आप निरंतर प्रवर्द्धमान रहे।

कोलकाता (राजरहाट) चातुर्मास की बात हैं एक दिन एक साध्वीश्री जी आई और कहा कि आपको साध्वीप्रमुखाश्री जी बुला रही हैं। उस समय मैं जप कर रही थी अतः नहीं जा सकी। जप संपन्न होते ही मैं आपश्री के उपपात में पहुँची। मैंने निवेदन किया कि आपने मुझे बुलाया किंतु उस समय नहीं आ सकी। कारण की भी जानकारी दी। उस समय प्रमुखाश्री जी ने सहज भाव से जो कहा वह उनकी विशिष्ट उपशम की साधना का परिचायक था। उन्होंने कहा—मैंने तुम्हें पहले नहीं कहा। कोई बात नहीं। ५०० से अधिक साध्वियों का संरक्षण करने वाली हस्ती के ये शब्द श्रवण कर मैं उनकी साधना के प्रति नत हो गई। और उस दिन मुझे लगा कि वे आत्मसाधिका आत्मआराधिका पहले थी उसके बाद साध्वीप्रमुखा। वे निरंतर अध्यात्म की गहराइयों का स्पर्श कर रही थीं। इसीलिए अहंकार उनको छू नहीं सका। ऋजुता, मृदुता इत्यादि दशविध धर्मों से संवलित वह प्रेरणामय व्यक्तित्व युगों-युगों तक साध्वी समाज का पथदर्शन करता रहे।

शासनमाता...

● साध्वी प्रियंवदा ●

शासनमाता की---
तेरी बलिहारी हम जायें
गौरव सुषमा को महकायें
यादें भूल नहीं हम पायें।।

शांत सौम्य थी तेरी सूरत
लगती मनमोहक वह मूरत
फैली जग में भारी कीरत।।

गुरुवर ने अनशन पचखाया
गण में कीर्तिमान बनाया
श्रमणी गण का मान बढ़ाया।।

तुम हित मित परिमित भाषी
पाई गुण रत्नों की राशि
उज्ज्वल निर्मल सतत प्रकाशी।।

अर्पित करते श्रद्धांजलियाँ
गाये जन-जन विरुदावलियाँ
मुरझी नाजुक नन्हीं कलियाँ।।

लय : धरती धोरां री---

अर्हम

● साध्वी मौलिकयशा ●

मां! यह केवल एक शब्द नहीं अहसास है। अहसास ममत्व का, सिंचन का, शिक्षण का व शक्तित्व का।

ममत्व- उदयपुर चातुर्मास (२००७) का प्रसंग है। मैं उस समय पारमार्थिक शिक्षण संस्था में मुमुक्षु के रूप में साधनारत थी। मेरा रीढ़ की हड्डी के नीचे एक ऑपरेशन होना था। मेरे संसारपक्षीय पापा-मम्मी मुझे लेने आए हुए थे। एक डर का मन में होना स्वाभाविक था। हमारी मनः स्थिती को भांपकर साध्वी प्रमुखाश्रीजी ने फरमाया- 'आपणे भिक्खू स्याम् को शरणो है, फेर डर की के बात है, सब ठीक होसी।' कोलकाता (संसारपक्षीय घर) जाने के बाद मेरे ईलाज का सारा कार्य इतनी सहजता व सरलता से हो गया जिसे मैं आचार्यश्री महाप्रज्ञजी व साध्वी प्रमुखाश्रीजी का पुण्य प्रताप मानती हूं।

१७/०६/२०१० भाद्रव शुक्ला दशमी के दिन मेरी दीक्षा हुई। कुछ दिनों पश्चात् हम आठों नवदीक्षित साध्वियों ने उपवास किया। मातृहृदया साध्वी प्रमुखाश्रीजी ने कम से कम १०-१२ बार हमारी साता पूछवाई। आपश्री के ममत्व को पाकर हम आठों साध्वियां गद्‌गद् थी।

शिक्षण- दीक्षा को लगभग एक-डेढ़ माह बीते थे। एक बार आपश्री ने अपने उपपात में बैठी हम छोटी साध्वियों को फरमाया- 'तुम सब यहां बैठी किसी एक साध्वी की एक विशेषता के बारे में बताओ। प्रारंभ सबसे छोटी साध्वी से करो।' साध्वी कार्तिकयशाजी ने खड़े होकर निवेदन किया कि किसी एक की विशेषता बताना कठिन लगता है। सबके एक-एक गुण बता दूं? साध्वी प्रमुखाश्रीजी ने प्रसन्नता के साथ फरमाया- 'ठीक है, तुम सबके एक-एक गुण बता दो।' इस तरह हम सबने सबकी एक विशेषता के बारे में बताया। यह क्रम लगभग तीन दिन तक चला। अंत में आपश्री ने प्रायोगिक शिक्षण देते हुए कहा- 'किसी की बुराई या कमी निकालना सरल है किन्तु गुणों को देखना व प्रमोद भावना भाना कठिन। तुम सबने बहुत सहजता व सरलता से एक दूसरे के गुणों का अंकन किया है। ये अच्छी बात है, जो प्रमोद भावना का यह सूत्र जीवन में अपना लेता है, वह स्वयं के भीतर भी सद्‌गुणों का विकास कर सकता है।'

सिंचन- कोलकाता चतुर्मास से पूर्व आपश्री उत्तर हावड़ा पधारे। उस समय आपश्री ने मेरे (मौलिकयशा) व साध्वी भावितयशाजी की ओर इंगित कर साध्वीश्री स्वास्तिकप्रभाजी से कहा- 'इन दोनों ने इतने कम समय में साध्वाचार के लगभग सारे कार्य सीख लिए। गुप्तिप्रभाजी (अग्रणी) ने भी इनपर अच्छा श्रम किया है। ये दोनों खूब अच्छा विकास कर सकती है।' आपश्री के इन शब्दों ने ओर आगे बढ़ने व विकास के नव वातायन खोलने के लिए प्रेरणा सिंचन का कार्य किया।

शक्तित्व- बीदासर वृहद् दीक्षा महोत्सव के पश्चात् गुरुदेव का पधारना राजलदेसर में केवल एक दिन के लिए हुआ, जहां हमारी चाकरी थी। दूसरे दिन विहार के समय मैं और साध्वी भावितयशाजी, साध्वी प्रमुखाश्रीजी के पहुंचाने कुछ दूर तक गये। हम दोनों की आंखों से अश्रुधार बह रहे थे। साध्वीश्री सुमतिप्रभाजी ने हमें देखा तो प्रमुखाश्रीजी को निवेदन कर दिया। मातृहृदया साध्वीप्रमुखाश्रीजी ने पैर थामे व हमें अपने पास बुलाकर मेरे जुड़े हुए हाथों पर अपने कर-कमलों को रखकर फरमाया- 'तुम तो वीर बाला हो और वीर बालाएं रोती नहीं है।' इसी तरह कोलकाता चातुर्मास (२०१७) में भी एक बार प्रसंगवश फरमाया- 'अपनी भुजाओं को मजबूत रखो, अभी संघ का बहुत काम करना है।' ये आशीर्वाद भरे शब्द हर क्षण मुझमें शक्ति का संचार करते हैं।

और भी कितने ही संस्मरण स्मृति पटल पर उभर रहे हैं, जिससे अंतस्थल से एक ही आवाज निकलती है-

मां तुझे सलाम!!!
शासनमाता तुझे सलाम!!

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
2 - 8 मई, 2022

✦ *रोज सोने से पूर्व सोचो, आज के दिन तुमने सुकृत क्या किया, भला काम क्या किया? यह सोचना भी तुम्हारे लिए शुभ होगा।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी के प्रति उद्गार

गाथा शासनमाता की

● **मुनि वर्धमान** ●

अपने पुरुषार्थ, प्रतिभा एवं प्रशासन कौशल के आधार पर साध्वी प्रमुखा, महाश्रमणी, संघ महानिदेशिका, असाधारण साध्वी प्रमुखा, शासनमाता जैसे गरिमामय पदों को गौरवान्वित करने वाली मातृ हृदया साध्वी प्रमुखाश्री कनकप्रभाजी की मैं स्मृति करता हूं।

आचार्य श्री तुलसी द्वारा खोजा गया अमूल्य रत्न साध्वी प्रमुखा कनकप्रभाजी ने गुरु तुलसी के पवित्र आभावलय में रहकर बहुमुखी विकास किया । शासनमाता की संघ निष्ठा, गुरु निष्ठा, आचार निष्ठा, सेवा निष्ठा, दायित्व निष्ठा, सत्य निष्ठा, अनुशासन निष्ठा, अध्यात्म निष्ठा, क्षम निष्ठा, संयम निष्ठा प्रेरक थी । गुरुदेव तुलसी ने ६/७/१९९४ दिल्ली के अध्यात्म साधना केन्द्र में फरमाया था- 'साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा की योग्यता, आचार्य पद की योग्यता से कम नहीं है।'

आचार्यश्री महाप्रज्ञजी की संसारपक्षीय भानजी साध्वी प्रमुखा कनकप्रभाजी की सोच, हृदय और आचरण सब कुछ राजमहल जैसी विशालता, भव्यता एवं उच्चता लिए हुए था।

आचार्य श्री महाश्रमणजी का तो कहना ही क्या, आपश्री शासन माता को अत्यधिक सम्मान देते थे। उनको चित्त समाधि और आध्यात्मिक Tonic देने के लिए गुरुदेव ने अपने देह की परवाह किए बिना लंबे-लंबे उग्र विहार किए। आचार्य प्रवर स्वयं उनको बैठकर वंदन करते थे। इससे उनकी महानता स्वयं सिद्ध होती है।

आजतक धर्मसंघ में कीर्तिमान है कि साध्वी प्रमुखाश्री कनकप्रभाजी को सर्वाधिक लंबे समय तक साध्वी प्रमुखा पद पर रहने का सौभाग्य मिला। मुझे लगा कि संघ महानिदेशिका के व्यक्तित्व में पराक्रम, पुरुषार्थ की चेतना अच्छी थी। महाश्रमणी जी में पुरुषार्थ भी था और उसी का एक अंग था प्रेरणा। वे दूसरों को प्रेरणा देते थे, ताकि दूसरे लोग विकास कर सकें। शासनमाता का जीवन विकास की यात्रा है।

संघ महानिदेशिका जी ने तीन आचार्यों की वरद छाँह में कृपामृत पीकर स्वयं को शक्ति- शांति संपन्न बनाया । प्रारंभ से अंत तक उनको गुरु सान्निध्य प्राप्त हुआ। कितनी विरल आत्मा थी। शारीरिक अस्वस्था में भी समता, सहनशीलता, आत्म रमण में तल्लीनता आपकी उत्कृष्ट साधना की पराकाष्ठा थी।

आठवीं साध्वी प्रमुखा के आठ दुलर्भ बिंदु -

1. धर्मसंघ की पहली साध्वी प्रमुखा, जिन्होंने तीन गुरुओं की सेवा की।

2. युवाचार्य मनोनयन पत्र में साक्षी रूप में हस्ताक्षर करने वाली साध्वी प्रमुखा।

3. ८० हजार से अधिक किमी की यात्रा आपने की है।

4. ५० वर्षों तक साध्वी प्रमुखा के रूप में आपने धर्मसंघ को सेवा दी है।

5. विदेश (नेपाल और भुटान) यात्रा करने वाली पहली साध्वी प्रमुखा ।

6. पहली साध्वी प्रमुखा जिन्होंने आचार्य पदाभिषेक समारोह के कार्यक्रम का संचालन किया।

7. राजकीय अतिथि का सम्मान पाने वाली साध्वी प्रमुखा।

8. आचार्यों की उपस्थिति में भी पट्ट पर बैठने की आज्ञा प्राप्त करने वाली पहली साध्वी प्रमुखा।

ममतामयी शासनमाता की अत्यंत ममता मुझ पर -

शासनमाता मेरी परम उपकारी थी। संसारपक्षीय माताजी मुझे दीक्षा की आज्ञा नहीं दे रही थी, तो उनको समझाने का काम साध्वी प्रमुखाश्रीजी, मंत्री मुनिश्री और कई चारित्रात्माओं ने किया था और उसमें मुख्य भूमिका साध्वी प्रमुखाश्रीजी की थी। उन्होंने एक माँ बनकर मेरे संसारपक्षीय माँ को समझाया था।

संघ महानिदेशिकाजी की मेरे पर गृहस्थ काल से ही अत्यंत कृपा थी। ८ सितंबर २०१३ को लाडनूं में गुरुदेव ने मुझ पर महती कृपा कर दीक्षा का आदेश फरमाया। मैं कार्यक्रम के बाद महाश्रमणीजी के दर्शन करने गया था। वहां जाकर देखा साध्वी प्रमुखाश्री बाहर सिढियों के पास विराज रहे थे। जाते ही उन्होंने मुझसे कहा- 'अक्षय तुम तो कल कह रहे थे कि तुम्हें आज मुमुक्षु बनाएंगे, पर तुम्हारी तो दीक्षा का आदेश ही हो गया, अगर तुम हमको बताते कि गुरुदेव तुम्हारी दीक्षा आज फरमाने वाले हैं, तो हम प्रवचन में जरूर आते।' मैंने कहा- 'महाराज ! मुझे भी नहीं पता था कि गुरुदेव आज मेरी दीक्षा फरमाएंगें, मैंने तो मुमुक्षु बनाएंगें, ये ही सोचा था । महाराज मैं तो खुद ही Surprised था कि गुरुदेव मेरा सीधा Promotion ही कर देंगे।' शासनमाता मुस्कुराने लग गए । फिर पास में बड़े एक साध्वी जी ने कहा कि- 'जैसे ही बाहर तुम्हारा नाम announce हुआ, महाराज अपने कक्ष से बाहर पधार गए ताकि वो तुम्हारा speech अच्छे से सुन सके, क्योंकि बाहर स्पीकर लगा हुआ था।'

साध्वी प्रमुखाश्रीजी वात्सल्यता की प्रतिमूर्ति थी। दीक्षा के बाद भी महाश्रमणीजी का बहुत वात्सल्य मुझे मिला। मेरे पैरों में छाले देखकर शासनमाता ने गुरुदेव को अर्ज किया कि 'गुरुदेव इनके पैरों में बहुत छाले हो गए हैं, इन्हें मेहंदी लगानी पड़ेगी। कृपा कराएं।'

साध्वी प्रमुखाश्रीजी ने अनेकों बार मेरी गोचरी करवा कर दी। मैं जब भी गोचरी कर रहा होता और अगर आप वहां से पधार रहे होते तो मुझे देखकर मेरे पास आ जाते और झोली ले लेते और फिर पूरी गोचरी करवा कर मुझे झोली बक्शा देते । एक बार तो ऐसा हुआ कि शासनमाता आहार करवा रहे थे, मुझे देखा और सतियों को भेजा मुझे बुलाने के लिए। मैं संकोच कर रहा था क्योंकि कई सतियांजी आहार कर रहे थे। कुछ संकुचाते हुए मैं अंदर गया और साध्वी प्रमुखाश्रीजी ने अपनी पूरी सजी-सजाई गोचरी की पात्री मुझे बक्शा दी। मैंने कहा-'महाराज गुरुदेव कुछ कहेंगे तो?' शासनमाता ने कहा- 'अगर गुरुदेव तुम्हें ओलमा दे तो, वह ओलमा तुम अगले दिन मुझे return कर देना।'

आंध्र प्रदेश की यात्रा में महाश्रमणीजी को पता चला कि मैंने वर्षीतप चालू किया है। अगले ही दिन साध्वी प्रमुखाश्रीजी जब गुरुदेव को वंदना करने के लिए पधारे, तब संतो से पूछा- 'वर्धमान मुनि कौनसे कमरे में हैं?' संतो ने कमरा बताया। संघ महानिदेशिकाजी स्वयं मुझे दर्शन देने पधारे और कहा सुना है- 'वर्षीतप चालू किया है।' मैंने कहा- 'तहत' महाराज ने फरमाया- 'क्यों कर रहे हो, आगे विहार बड़े हैं, गर्मी भी बहुत है और तुम्हारा शरीर भी कोमल है।' मैंने कहा-'महाराज मेरी बहुत समय से इच्छा थी। गुरुदेव की कृपा से और आपके आशीर्वाद से मैं इसे अच्छे से पूरा कर लूंगा।' महाराज ने कहा- 'मन तो नहीं है पर तुम अपना ध्यान अच्छे से रखना। पारणे में अच्छे से आहार करना। मंगलकामना।'

एक बार संसारपक्षीय मां ने प्रमुखाश्रीजी से कहा- 'महाराज आपने इनको तो आगे बढ़ा दिया, मुझे क्यों प्रेरणा नहीं दी? वरना मैं भी बचपन में दीक्षा ले लेती।' महाश्रमणीजी ने फरमाया- 'अगर राजश्री तुम दीक्षा लेती तो हमे वर्धमान मुनि कैसे मिलते ? तुमने दीक्षा नहीं ली, इसलिए हमें वर्धमान मुनि मिल गए।' इस प्रकार शासनमाता की बहुत कृपा मुझे मिली।

ऐसी प्रज्ञावान, आस्थावान, साधनाशील साध्वी प्रमुखाश्री कनकप्रभाजी के प्रति मैं प्रणति अर्पित करता हूं, वंदन करता हूं । उनके जीवन से हम सभी को संयम, त्याग, ज्ञान आदि की प्रेरणा मिलती रहे, आत्मबल-मनोबल की प्रेरणा मिलती रहे, यह अभिकांक्ष्य है।

इन्हीं शुभ भावनाओं के साथ-

'यूँ तो सभी मरण के राही हैं, एक रोज मर जाते हैं। पर धन्य वे हैं, जो मरकर भी अमर नाम कर जाते हैं।'

अर्हम्

● **शासनश्री साध्वी रतनश्री** ●

ऊँ जय शासन माता।
प्यारी प्यारी मूरत। सुख दाता त्राता।

कलकत्ता में जन्म लियो थे, राजनगर दीक्षा- माता
तुलसी रे चरणां में, ग्रहण करी शिक्षा।

सरस्वती कंठा में उतरी, हाथां में लेखन- माता
चलाती रहती हरदम, कियो श्रुत रो अवगाहन।

चुम्बक सी आकर्षण शक्ति, जादू नयना में - माता
गतिशील चरण हां थांरा, अपरित वचनां में ।

तुलसी कृपा स्यूं श्रमणी गण में, शिखर स्थान पायो- माता
विविध विभूषण भूषित, जीवन शोभायो।

महाश्रमण रे चरणां में, अंतिम सांस लियो- माता
पंडित मरण वरण कर, जीवन धन्य कियो।

तर्ज : आरती-----

वंदन

● **साध्वी परमयशा, साध्वी विनम्रयशा**
साध्वी मुक्ताप्रभा एवं साध्वी कुमुदप्रभा ●

हम नमन करते हैं ममतामय मनस्विनी को,
हम नमन करते हैं समतामय स्रोतस्विनी को,
हम नमन करते हैं क्षमतामय तेजस्विनी को।

असाधारण साध्वीप्रमुखाश्री जी का जीवन असाधारण विशेषताओं का समवाय था। सरवर, तरुवर और संत जन खुले हाथों पुण्यों का वैभव बाँटते हैं, वैसे ही अध्यात्म चंद्रिका भक्ति भागीरथी, प्रणम्य आस्था महाश्रमणीजी के एक जीकारा में जागृति का अहसास था। आपके नयनों में करुणा का अमृत निर्झर था। रोम-रोम में ऊर्जा का पावर हाउस था।

आपके मस्तक में विराजमान रहती सरस्वती। जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण है आप द्वारा विनिर्मित साहित्य दीर्घा। आपकी मनीषा में 'मेरा जीवन मेरा दर्शन' को नया स्वरूप प्रदान किया। एक महामानव आचार्यश्री तुलसी को सदियों सहस्रावादियों तक नई पीढ़ी का आदर्श बना दिया। आपकी सधी, लेखनी से लिखा गया साहित्य हो या आत्मकथा, कविताओं का लालित्य हो या प्रवचन पटुता का नैपुण्य, हर पाठक को यों अहसास देता जैसे हम अध्यात्म के साथ यात्रायित हो रहे हैं।

आपके नयनों में बसती महिमामय महालक्ष्मी की छवि। आप Peaceful जीवन जीती। Powerful संकल्पों, सपनों का आलोक बाँटती। Purposeful लक्ष्यों का संपोषण प्रदान करती इसलिए आप Proudful लक्ष्मी ज्यों चार तीर्थ के दिल दिमाग में संस्कारों का निवेश कराती हुई आकर्षण का केंद्र रहती थी।

जिनके रोम-रोम में जिनशासन बसा था
जिनकी कर कोशिका में भिक्षु शासन रमा था
जिनकी गुरु निष्ठा और गण निष्ठा लाजवाब थी
जिनकी आगम आज्ञा मर्यादा निष्ठा बेजोड़ थी
जो हर दिन खुशी और खुशहाली का संदेश देते

ऐसी श्रमशीलता, स्नेहशीलता, कार्यकुशलता की महाज्योत के चरण कमलों में दुर्गा भवानी सदा नतमस्तक रहती थी। आपकी हर सुबह ज्ञान, रश्मि योग रश्मि, चैतन्य रश्मिमयी होती। हर शाम नई सोच नए सफर को लिए पवित्रता का संदेश देती।

आपकी स्नेहिल छाँह तले हमें मिलता था अध्यात्म का पोस्टिक रसायन।

आपके महाप्रयाण से एक शासनमाता की, एक असाधारण साध्वीप्रमुखा की, एक संघ महानिदेशिका की, एक महाश्रमणी की कमी हो गई।

शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी के प्रति उद्‌गार

महाशक्ति शासनमाता को प्रणाम

● साध्वी मल्लिकाश्री ●

तेरापंथ धर्मसंघ आध्यात्म शिखर पर प्रतिष्ठित एक प्राणवान धर्मसंघ है। इसकी नींव में संविधान, मर्यादा, अनुशासन और साधना की मजबूत ईंटें है। एक आचार्य परंपरा का वरदान प्रदान कर क्रांतिकारी आचार्य भिक्षु ने तेरापंथ में विकास के सिंह द्वार उद्‌घाटित किए। तेरापंथ धर्मसंघ एक आचार्य के नेतृत्व के कल्पवृक्ष की छांव तले आत्म-शांति, चित्त-समाधि तथा अपूर्व आनंद का आश्रय धाम है।

एक नेतृत्व की परंपरा को सुरक्षित रखते हुए आचार्यों ने अपेक्षानुसार दायित्व का विस्तार भी किया। एक छोटा सा कदम वक्त के साथ चलते-चलते हजारों किलोमीटर की यात्रा में और पल शताब्दी में बदल जाता है। शब्द ग्रन्थ बन जाता है, बूंद सागर में और किरण प्रभाकर में परिणत हो जाती है। अन्नतता के अन्वेषक गणाधिपति गुरुदेव तुलसी ने भी धर्मसंघ के कैनवास पर १४ जनवरी सन् १९७२ के दिन एक बिंदु को रेखा के रूप में प्रस्तुत किया। समय के प्रवाह के साथ वह रेखा एक सुंदर चित्र के रूप में उभर आई। बिंदु रूप में साध्वी कनकप्रभा और चित्र रूप में शासनमाता असाधारण साध्वी प्रमुखाश्री कनकप्रभाजी को देखा जा सकता है।

स्टीव जॉब्स ने जिस प्रकार आईफोन का इजाद कर गैजेट्स की दुनिया में धूम मचा दी, उसी प्रकार यह तुलसी कृति भी गौरवमयी साध्वीप्रमुखाओं की श्रेणी में अपूर्व इतिहास बनाने वाली उभरी है। बिंदु से चित्र बनने में गुरुत्रयी की अनन्य कृपा के साथ-साथ आपकी नैसर्गिक एवं अर्जित क्षमताओं का सुयोग भी रहा है।

आचार्य तुलसी के शब्दों में- 'हमारे धर्मसंघ में अब तक जितनी साध्वीप्रमुखाएं हुई है- महासती सरदारांजी से लेकर लाडांजी तक, उनमें इनका अनुपम स्थान है। उत्कृष्टता की दृष्टि से कनकप्रभाजी का प्रथम स्थान है।'

आचार्य महाप्रज्ञजी ने साध्वी प्रमुखाश्री के व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व का मूल्यांकन करते हुए कहा- 'दायित्व उन्हें दिया जाता है जिनमें क्षमता हो, योग्यता हो। कनकप्रभाजी में दोनों हैं। इनमें प्रबुद्धता है, कर्मठता है, लेखन है, वक्तृत्व की क्षमता है। जन-सभा में जब भी बोलती है कुछ नया बोलती है। इनके पास मौलिक चिंतन है। इनकी विनम्रता को प्रथम श्रेणी में रखा जा सकता है। साध्वी प्रमुखाश्री ने योग्यता की कसौटी में शत-प्रतिशत नहीं सवा सौ प्रतिशत अंक प्राप्त किए हैं। हर दृष्टि से ये खरी उतरी हैं। सहिष्णुता में नंबर-वन है। वैराग्य व साधुत्व के प्रति बेजोड़ निष्ठा है।'

वर्तमान में आचार्यश्री महाश्रमणजी ने समय-समय पर जिस अहोभाव और उदारता के साथ साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी के व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व का मूल्यांकन किया, वह नए इतिहास का सृजन है। हिमालय सी गुरुता के आसन पर प्रतिष्ठित आचार्य-प्रवर ने अपने आचार्य पदाभिषेक के अवसर पर कार्यक्रम के मध्य महासती, महाशक्ति, विभूति आदि-आदि महनीय शब्दों से सम्मान किया। गुवाहाटी चातुर्मास में आचार्यप्रवर ने साध्वीप्रमुखाश्री के ७६वें वर्ष में प्रवेश पर 'असाधारण साध्वी प्रमुखा' संबोधन से संबोधित किया।

असाधारण प्रतिभा की धनी साध्वी प्रमुखाश्री कनकप्रभाजी ने साहित्य सृजन और संपादन में भी एक नया कीर्तिमान स्थापित किया है। यश-ख्याति की भावना से दूर रहकर तुलसी वाङ्मय की १०८ पुस्तकों का संपादन कर आपने जो कार्य किया है, वह आत्म-साधना की ऊंचाई और संघ-निष्ठा की गहराई का प्रतीक है।

आपश्री का उर्वर मस्तिष्क, संवेदनशील-हृदय, पराक्रमी कर-युगल एवं वीतरागता की दिशा में बढ़ते कदम 'शासनमाता' की जीवन पुस्तक के प्रेरक पृष्ठ है।

प्रबुद्धता, उत्कृष्ट कोटि की विनम्रता, समर्पण शीलता आदि विशेषताओं की सहचरी बनने वाली आपकी संवेदनशीलता ने चतुर्विध धर्मसंघ के हृदय की गहराईयों में उतरकर अमिट आलेख लिखा है। इस संवेदनशील व्यक्तित्व की अप्रतिम शक्ति को तीन रूपों में महसूस किया जा सकता है-

१ केयरिंग पावर

२ कम्यूनिकेटिंग पावर

३ केटलाइजिंग पावर

०१ केयरिंग पावर - धीरुभाई अंबानी की तरह साध्वीप्रमुखाजी 'सर्विस विद केयर' का उद्‌देश्य सामने रखकर साध्वी समाज के निर्माण एवं विकास के लिए प्रयत्नशील थे। प्रायः साध्वियों के स्मृति निर्झर से आपकी कृपा-वत्सलता की रसमय बूंदें समय-समय पर झरती रहती थी। इन बूंदों का संकलन किया जाए तो आपका केयरिंग पावर यथार्थ रूप में अभिव्यक्त हो सकता है।

०२ कम्यूनिकेटिंग पावर - कुशल संवाद संप्रेषण व्यक्तित्व का एक विशिष्ट गुण है। समाज में रूपांतरण लाने वाली और संस्कृति में नया अध्याय जोड़ने वाली संप्रेषणशीलता साध्वी प्रमुखाश्रीजी की एक विलक्षण शक्ति है। सही समय पर, सही तरीके से, सही शब्दों में कही जाने वाली आपकी बात सीधे श्रोता के हृदय एवं मस्तिष्क में उतरती है। निष्कर्षतः इस संवाद-संप्रेषण की कला से अनगिनत व्यक्तियों के मन-मंदिर में आपने संघ-संघपति एवं आत्मा के प्रति आस्था के अभिनव दीप जलाए हैं।

०३ केटलाइजिंग पावर - शासनमाता की प्रेरणा केटलिस्ट की तरह कार्य करती है। केटलाइजिंग परिवर्तन की सुनियोजित प्रक्रिया है। जैसे केटलिस्ट की उपस्थिति रासायनिक प्रक्रिया की गति को रूपांतरित कर देती है, वैसे ही आपकी प्रेरणा भी भीतरी प्रवाह को नया-मोड़ देती है। सरस शैली और मधुर शब्दों का सुयोग व्यक्ति के अंतःकरण को स्वतः निर्दिष्ट पथ का अनुगामी बना देता है। जैसे एक राजा लाखों याचको को, सूर्य कमलों को और मेघ-चातकों को संतुष्ट कर सकता है, वैसे ही आपके इस शक्तिमयी व्यक्तित्व ने अनगिनत व्यक्तियों को बोधि-समाधि और विशुद्धि का अर्पण करके उन्हें तृप्त किया है।

अस्तु: सपनों के दीपक में पुरूषार्थ का तैल डालकर आपने बिंदु से चित्र बनने का यह सुनहरा सफर तय किया है। इन पावन पलों में यही श्रद्धांजलि अर्पित करती हूं कि मन की वल्गा को थामने वाले इस विशिष्ट व्यक्तित्व का संरक्षण सदैव स्वर्गलोक से मेरी (हमारी) साधना को प्रदीप्त करता रहे।

अंत में कुछ पक्तियां कविता की -

जिन के अंतःकरण में ज्ञान का दीप
निरंतर जलता रहा

दर्शन की गहराईयों में चित्त निरंतर
गोते लगाता रहा।

जीवन की चादर को चरित्र के धागों
से सींता रहा और

तप की आंच में सदा कुंदन बन
दमकता रहा

ऐसी वीर्य-वीरांगना की
असाधारणता को,

प्रतिक्षण प्रणाम, नित्य-नमन,
परेण्य-वंदन।।

साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी की स्मृति सभा के आयोजन

चिंतनशील व्यक्तित्व की धनी थी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा

छापर।

मुनि पृथ्वीराजजी स्वामी के सान्निध्य में तेरापंथ धर्मसंघ की शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी की स्मृति सभा नवनिर्मित तेरापंथ ट्रस्ट भवन में रखी गई। कार्यक्रम का शुभारंभ मुनिश्री के नवकार महामंत्र के समुच्चारण से हुआ। महिला मंडल की बहनों द्वारा मंगलाचरण किया। मुनि पृथ्वीराज जी ने कहा कि शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी के प्रवचन का हर शब्द श्रोता के मन को भाने वाला था।

कार्यक्रम में सेवा केंद्र में विराजित मुनि हेमराज जी स्वामी, मुनि विकास कुमार जी, मुनि कोमलकुमार जी, मुनि दिनकर कुमार जी पधारे। साध्वी प्रणवप्रभाजी, साध्वी मंजुप्रभाजी, रतनगढ़ विधायक अभिनेश महर्षि, आचार्य महाश्रमण चातुर्मास व्यवस्था समिति अध्यक्ष माणकचंद बुच्चा, तेरापंथ सभा अध्यक्ष सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं सदस्यों ने शासनमाता के प्रति अपनी भावांजलि गीत, मुक्तक, विचारों से अर्पित की।

कार्यक्रम में नगर भाजपा मंडल अध्यक्ष जयराम जांगिड, पूर्व पार्षद गोपाल सुयार, नगरपालिका उपाध्यक्ष सीताराम प्रजापति, सेन समाज के अध्यक्ष कालूराम सेन, हुकमाराम बड़बड़, राजाराम तापड़िया, पार्षद प्रतिनिधि उमाशंकर रतवा, नानकराम तापड़िया सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित हुए और अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। कार्यक्रम का संचालन तेरापंथ सभा मंत्री चमन दुधोड़िया ने किया।

साध्वीप्रमुखाश्री जी की स्मृति सभा का आयोजन

केसिंगा (उड़ीसा)।

शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी की स्मृति सभा का आयोजन सभा के तत्त्वावधान में किया गया। मुनि प्रशांत कुमार जी ने कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ अपने आपमें गौरवशाली है। इस संघ में समर्पण का भाव जन्मघुट्टी के रूप में मिलता है। जहाँ समर्पण होता है वहाँ विकास के रास्ते खुलते हैं।

मुनि कुमुद कुमार जी ने कहा कि अनगढ़ पत्थर को तराशकर गुरुदेव श्री तुलसी ने प्रतिमा का आकार दिया। जो आज शासनमाता असाधारण साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी के रूप में पूजनीय बन गई।

कार्यक्रम का शुभारंभ तेरापंथ कन्या मंडल के मंगलाचरण से हुआ। सभा अध्यक्ष मंगतराम जैन, ओडिशा प्रांतीय सभा अध्यक्ष मुकेश जैन, केसिंगा तेयुप अध्यक्ष राजेश जैन, कांटाभाजी सभाध्यक्ष विनोद जैन, केसिंगा महिला मंडल अध्यक्ष अंकिता जैन सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं सदस्यों द्वारा साध्वीप्रमुखाश्रीजी को वक्तव्यों एवं गीत के माध्यम भावांजलि अर्पित की। ओड़िशा प्रांतीय उपाध्यक्ष गोविंद जैन ने आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन शुभंकर जैन ने किया।

लोक और आत्मकल्याण के उपदेशता भगवान ऋषभ

माधावरम, चेन्नई।

तेरापंथ सभा के तत्त्वावधान में आचार्य महाश्रमण तेरापंथ जैन पब्लिक स्कूल के विशाल प्रांगण में आदिनाथ भगवान ऋषभ का जन्म एवं दीक्षा कल्याणक समारोह साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में मनाया गया। साध्वीश्री जी ने रिद्धि-सिद्धि मंत्रों एवं ध्यान के द्वारा संपूर्ण श्रावक समाज को भक्तामर अनुष्ठान करवाया।

साध्वी डॉ० शौर्यप्रभाजी ने कहा कि भगवान ऋषभ ने अपनी ज्ञान चेतना और पुरुषार्थ से मन इच्छित लक्ष्य प्राप्त किया। साध्वीवृंद ने साध्वी मंगलप्रज्ञा जी द्वारा रचित ऋषभ गुणोत्कीर्तन का संगान किया।

किशोर मंडल एवं ज्ञानशाला के बच्चों ने भक्तामर रचना से जुड़े आध्यात्मिक प्रसंग को लघु नाटिका के माध्यम से प्रस्तुति दी। कविता जैन एवं रेखा मरलेचा ने इस नाटिका के संयोजिका का दायित्व निभाया। साध्वी डॉ० राजुलप्रभाजी ने कार्यक्रम का संचालन किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
2 - 8 मई, 2022

✦ *अणुव्रत कहता है–तुम परलोक को मानो या मत मानो, आचरण को अच्छा बनाने का प्रयास करो, जीवन में नैतिकता को धारण करो, जीवन उन्नत बन सकेगा।*

–आचार्यश्री महाश्रमण

विशेष आलेख

समर्पण की पराकाष्टा एवं कुशल प्रशासन का बेमिशाल योग

● मुनि सिद्धप्रज्ञ ●

दुनिया में कुछ व्यक्तित्व ऐसे होते हैं जो पूर्व जन्म के सुसंस्कार के साथ अद्भुत कोसल लिए उत्पन्न होते हैं और जो बचपन से सरलता समर्पण एवं साहस लेकर आते हैं वे जन्म से महान होते हैं और जो जन्म से महान होते हैं वे अपने पुरुषार्थ, एकाग्रता, संयम से परिपूर्ण होकर कर्म से महान बन जाते हैं और जो कर्म से महान बन जाते हैं वे पापभिरूता स्वाध्याय व गुरुकृपा पाकर भाग्य से महान बन जाते हैं।

ऐसे ही एक महान व्यक्तित्व हमारे सामने आया शासनमाता साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा जी के रूप में

समर्पण की पराकाष्टा

मैंने देखा साध्वीप्रमुखाश्री जी में संघ और संघपति के प्रति बेजोड़ समर्पण था, जैसे-जैसे उनकी उम्र बढ़ती गई वैसे-वैसे उनका गुरु के प्रति इंगित और आकार के प्रति समर्पण बढ़ता ही गया। अद्भुत था उनका समर्पण निस्वार्थ और उनका समर्पण बेजोड़ समर्पण था।

प्रशासनीय जीवनशैली

संघ महानिर्देशिका साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी में प्रशासन करने की अद्भुत क्षमता थी। एक साध्वी होकर उच्चस्तर का प्रशासन होना एक विशिष्ट बात है। ७०० से अधिक साध्वी समाज पर उनका प्रशासन एक महान गुरु की तरह उभरकर सामने आया। एक महिला होकर कितनी बड़ी नारी शक्ति संपन्न महिला समाज का कुशल नेतृत्व करना सभी के प्रति समान व संतुलित व्यवहार करना दुनिया का अद्भुत आश्चर्य था।

अनुशासन जीवनशैली एक गुरु के रूप में निखरकर सामने आया

असाधारण साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी के अनुशासन शैली में आचार्य तुलसी की बाहरी कठोरता, आचार्य महाप्रज्ञ जी की भीतरी करुणा और आचार्य महाश्रमण की समता, क्षमता और प्रसन्नता तीनों का रूप एक साथ नजर आ रहा था।

आचार्य बनने की योग्यता

क्या तेरापंथी साध्वी एक आचार्य बन सकती है? युगप्रधान आचार्य तुलसी ने समय-समय पर धीरे-धीरे कनकप्रभाजी को आगे बढ़ाया। गुरुदेव ने उन्हें दीक्षित किया, शिक्षित किया, प्रशिक्षित किया और एक अपनी छवि के रूप में एक कुशल प्रशासक के रूप में तैयार किया। आचार्य तुलसी अनेक बार यह कहा करते थे कि साध्वी समाज का कुशल नेतृत्व करके मुझे निश्चिंत बना दिया।

आचार्य तुलसी की छवि के रूप में

जैसे आचार्य तुलसी २२ वर्ष की छोटी उम्र में तेरापंथ के आचार्य बने वैसे कनकप्रभाजी ३० वर्ष की उम्र में तेरापंथ धर्मसंघ की आठवीं महासती व प्रथम साध्वीप्रमुखा बनी।

जैसे आचार्य तुलसी को समय-समय पर सर्वोत्तम संबोधन प्राप्त होते गए वैसे कनकप्रभाजी को समय-समय पर विशिष्ट संबोधन प्राप्त होते गए जैसे महाश्रमणी, संघ महानिर्देशिका, असाधारण साध्वीप्रमुखा, शासनमाता आदि-आदि।

जैसे आचार्य तुलसी ने पचास वर्ष से अधिक समय तक आचार्य पद पर प्रतिष्ठित रहे वैसे प्रमुखाश्री जी ने भी पचास वर्ष तक साध्वीप्रमुखा का कुशल संचालन किया। जैसे पचास वर्ष पूर्ण होने पर आचार्य तुलसी का अमृत महोत्सव मनाया गया वैसे ही पचास वर्ष पूर्ण होने पर प्रमुखाश्री का अमृत महोत्सव मनाया गया। दोनों का संबंध लाडनूं, गंगाशहर, केलवा, बीदासर आदि-आदि। दोनों ने ८ दशक पार कर नौवें दशक में प्रवेश कर लिया था। तीनों युगप्रधान आचार्यों को आगे बढ़ाने मे प्रमुख रही।

साध्वीप्रमुखाजी ने आचार्य तुलसी को साहित्य संपादन, साध्वियों व समणियों की सारणा-वारणा व लगातार यात्रा में सहयोगी बन करके लेखनी के माध्यम से संघ को आगे बढ़ाने में अहम भूमिका निभाई।

आचार्य महाप्रज्ञ जी को धर्मसंघ की आंतरिक संभाल दूर प्रदेशों की यात्रा प्रशासनिक सेवा से शासन काल को ऊँचाई दी। आचार्य महाश्रमण जी ने प्रशासन के गुर बताए व अंतरंग व्यवस्था में अहर्निश भूमिका निभाई। भारत वर्ष आपकी विशेषता को कभी नहीं भूल सकेगा।

अपने जीवन के अंतिम लक्ष्य को प्राप्त किया

सन् २०१९ में साध्वीप्रमुखाजी ने कोरोना की चपेट में आने के बाद भी अपने सहनशीलता, क्षमाशीलता व प्रसन्नता नहीं छोड़ी। परिणामस्वरूप आचार्य महाश्रमणजी के आशीर्वाद मंगलभाव से कोरोना को भी अपने स्थान से जाना पड़ा। स्वास्थ्य पूर्ण स्वस्थ नहीं होते हुए भी प्रमुखाश्री रायपुर से उज्जैन पधारी और मुझे इस बात की हार्दिक प्रसन्नता है कि लॉक डाउन के चलते हुए भी आप मेरी उज्जैन में मुनि दीक्षा पर प्रत्यक्ष उपस्थित हुई और मेरे लिए दीक्षांत भाषण भी दिया।

भीलवाड़ा का अंतिम प्रवास सानंद संपन्न हो गया था। सभी स्वस्थ रहे साध्वीप्रमुखाजी पूर्ण स्वस्थ एवं सक्रिय रही। किंतु भीलवाड़ा से जयपुर जाते वक्त विजयनगर में अचानक अस्वस्थ हो जाने से जयपुर में वाहन से जाना हुआ। समुचित उपचार आदि हुआ। एक असाध्य बीमारी के लक्ष्णों ने आपको घेर लिया था पर गनिमत रही कि उस समय वह उसने अपना रूप स्वरूप शांत रखा, जिसके चलते प्रमुखाश्री का लाडनूं आना हुआ और अमृत महोत्सव का सफल आयोजन हुआ और आचार्यप्रवर ने तेरापंथ का एक अद्भुत अलंकरण 'शासनमाता' प्रदान कर अपने ऋण से मुक्त हुए तो शासनमाता ने आचार्यप्रवर को जैन धर्म का सर्वोच्च अलंकरण 'युगप्रधान' देकर अपने समस्त ऋण से मुक्त हुई।

जब आचार्यप्रवर ने अद्भुत रूप दिखाया

आचार्यश्री ने प्रमुखाश्री को समुचित उपचार हेतु दिल्ली भेजा और स्वयं अति तीव्र गति से पद यात्रा करते हुए जैन आचार्य के इतिहास में कीर्तिमान स्थापित कर दिल्ली पहुँच गए, प्रमुखाश्री जी को असाध्य बीमारी कैंसर ने पूरी तरह जकड़ लिया था पर उनकी कष्ट सहिष्णुता व प्रसन्नता से संघ निश्चिंत था पर आखिर मौत से झूलते हुए अंतिम दम तक प्रमुखाश्री जी ने अपना मनोबल व आत्मबल नहीं छोड़ा। दर्द होने पर आचार्यप्रवर ने कहा कि आप पेनकिलर ले लिया करो, हाथ जोड़ते हुए प्रमुखाश्री ने कहा–आप हमारे लिए पेनकिलर की तरह हो, दवाई की जरूरत नहीं आपके आने से दर्द कम हो जाता है। आचार्यप्रवर ने उनकी चित्त समाधि बढ़ाने में अहम् भूमिका निभाई। और प्रमुखाजी ने अपने अंतिम लक्ष्य को प्राप्त कर तेरापंथ धर्मसंघ व अपने कुल का गौरव बढ़ाया।

अखंड भारत के नागरिक आपके कार्य अवदान अभियान को कभी नहीं भूल पाएगा।

जीवन अनुभव लिखने वाली वो कलम क्यूं थम गई।

सोने सी काया महासती की जा तुलसी में रम गई।

शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्रीजी के प्रति

शासनमाता रो उपकार

● नचिकेता मुनि अनुशासन कुमार ●

शासनमाता रो उपकार, ममतामयी वो दीदार।
म्हाने याद आवेला---
गुरु तुलसी री वा उणिहार, चमक्यों कनक स्यूं संसार।
म्हाने याद आवेला---
म्हाने याद आवेला---गाथा जगत गावेला।।

चंदेरी री चांदनी, प्रज्ञा परमपावनी।
म्हाने याद आवेला---
वाणी मन लुभावनी, कृतियाँ जग प्रकाशनी।।
म्हाने याद आवेला---
म्हाने याद आवेला---नैना तरस जावेलां।।१।।

गुरुत्रय कृपा आठूँयाम, उजली चदरिया अभिराम।
म्हाने याद आवेला---
म्हाने याद आवेला---पौरुष लौ जलावेला।।२।।

गण हित समर्पित हर श्वास, चिहुंदिशि गुणां री है सुवास।
म्हाने याद आवेला---
सन्निधि में सदा मधुमास, हर दिल जग्यां थारीं खास।
म्हाने याद आवेला---
म्हाने याद आवेला---विरह सबने रुलावेला।।३।।

महिमा हर जन-जन गाएं

● साध्वी मयंकयशा ●

जय-जय हे शासनमाता, श्रद्धा से शीष झुकाएं
ज्योतिर्मय जीवन गाथा, इस गण का कण-कण गाएं।।

पावन चंदेरी भू पर, कमनीय कला बन आई
भैक्षवगण की सुषमा को, बन कनकप्रभा महकाई
तुलसी की कृति विलक्षण, महिमा हर जन-जन गाएं।

वैराग्य धरा पर आया, लेकर अभिदान तुम्हारा
थी शांत सौम्य मुद्रा तव, धरती सा रूप सुनहरा
समता क्षमता ममता की, मूरत को प्रतिपल ध्याएं

हे श्रमणी गण सरदारां, नैतृत्व की शैली विलक्षण
अनुशासन में भी बहती, करुणा की धार विचक्षण
सन्निधि के वे मधुरिम पल, हम कभी भूल ना पाएं।

सेवाओं को तेरी हम, कैसे विस्मृत कर पाएं
तुम जलती ज्योत हो गण की, जो हर पल राह दिखाएं
कृपा पाई गुरुत्रय की, इतिहास स्वयं रच जाएं।।

थी प्रबल पुण्याई तेरी, गुरुवर खुद दौड़ आएं
करते जब सविनय वंदन, हम अपने भाग्य सराएं
भैक्षवगण की गरिमा को, हम कैसे मुख से गाएं

हे राजधानी भारत की, दिल्ली की धरा शुभंकर
बन गई अब तीरथभूमि, पा यह ऐतिहासिक अवसर
वसुगढ़ की पुण्य धरा से, अन्तर्मन भाव सुनाएं ।

साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी की स्मृति सभा के आयोजन

भीनासर

मुनि मोहजीत कुमार जी के सान्निध्य में 'शासनमाता की यादें' स्मृति सभा का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के सह-संगान से हुआ। शासनमाता स्मृतियों के आकाश में धरती पर परिव्रजन करते हुए मुनि मोहजीत कुमार जी ने सैंतालिस वर्षों के दीक्षा पर्याय काल में अनेकों बार प्रेरणा, शाब्दिक प्रोत्साहन, शुभाशंसा भरे आत्मीय भाव के संदर्भ में अनेकों छोटे-छोटे प्रसंगों की प्रस्तुति कर स्वयं अभिभूत बनें।

स्मृतियों के संसार में मुनि भव्य कुमार जी ने कहा कि उनकी विनम्रता, समग्र महिला समाज के लिए ही नहीं अपितु मानव जाति के लिए आदर्श है।

मुनि जयेश कुमार जी ने अपनी दीक्षा से दर्शन और प्रेरणा युक्त मुस्कान भरी यादों को भाव स्वरों में प्रकट किया। शासनश्री मुनि सुखलाल जी स्वामी के साथ बहिर्विहार में था, तब मैंने अपने दीक्षा दिवस पर पूज्यप्रवर के चरणों में अपनी भावना और आशीर्वाद की कामना से युक्त संस्कृत में पत्र तथा श्लोक निवेदित करता। वही पत्र एवं श्लोक जब साध्वीप्रमुखाश्री जी के पास पहुँचता तो वे स्वयं पढ़कर अपने आसपास की साध्वियों को दिखाकर कहते—देखो! जयेश मुनि का कितना सुंदर और भावपूर्ण पत्र-श्लोक आए हैं। यों एक बार नहीं अनेकों बार ऐसे प्रसंग आए हैं। प्रत्यक्ष हो या परोक्ष उनका कृपाभाव मुझ पर विशेष रहा। उनकी प्रेरणा मेरे लिए आदरणीय बनी हुई है।

मुनि भव्य कुमार जी के गीत ने शासनमाता की स्मृति को तरोताजा प्रत्यक्ष कर दिया। गीतों और काव्य की बहार ने उनकी आभा को मुखरित कर दिया।

सभा मंत्री महेंद्र वैद, महिला मंडल मोनिका सेठिया, सुशीला गोलछा ने अपने विचारों की प्रस्तुति दी।

राउरकेला

तेरापंथ सभा के तत्त्वावधान में शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी की स्मृति सभा का आयोजन बसंती कॉलोनी स्थित तेरापंथ भवन में आयोजित की गई। सभा की शुरुआत सबने एक साथ नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से की। तत्पश्चात सभी ने ४ लोगस्स का ध्यान किया। सभा के भूतपूर्व अध्यक्ष रूपचंद बोथरा ने साध्वीश्री जी के जीवन पर प्रकाश डाला और बताया कि कैसे वो एक साधारण साध्वी से शासनमाता बनी।

कनक बोथरा, ज्योति भंसाली, प्रेरणा बुच्चा, कविता डागा, हेमश्री भंसाली, विनीता जैन, मंत्री विजय बैद, दिनेश जैन आदि सभी ने अपने-अपने भावों के सुमन साध्वीश्रीजी को अर्पण किए। सभा का आयोजन संगीता दुगड़ ने किया।

दक्षिण मुंबई

दक्षिण मुंबई में शासनश्री साध्वीश्री विद्यावतीजी 'द्वितीय' के सान्निध्य में शासनमाता असाधारण साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी की स्मृति सभा महाप्रज्ञ पब्लिक स्कूल के प्रांगण में आयोजित की गई। तेरापंथ महिला मंडल द्वारा मंगलाचरण प्रस्तुत करने के बाद स्थानीय तेरापंथी सभा के अध्यक्ष गणपतलाल डागलिया, तेरापंथ युवक परिषद् के अध्यक्ष पूरण चपलोत, मुंबई तेरापंथी सभा के अध्यक्ष नरेन्द्र तातेड़, मुंबई टी पी एफ के अध्यक्ष तेजप्रकाश डांगी, मंत्री दिलखुश मेहता, विमल सोनी आदि विशिष्ट पदाधिकारियों ने अपने वक्तव्य में शासनमाता की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित की। साध्वी प्रेरणाश्रीजी ने शासनमाता से जुड़े संस्मरणों को सुनाकर सबको गदगद कर दिया। साध्वी ऋद्धियशाजी ने श्रद्धांजलि समर्पित की। तत्पश्चात साध्वी मृदुयशाजी सहित तीनों साध्वियों ने गीत की प्रस्तुति के द्वारा सभी के नेत्र सजल कर दिये।

साध्वी प्रियंवदाजी ने संक्षिप्त वक्तव्य में कहा- 'तेरापंथ धर्मसंघ की आठवीं साध्वीप्रमुखा का व्यक्तित्व विशालता लिये हुए था। आचार्यश्री तुलसी ने साध्वी कनकप्रभा को साध्वी प्रमुखा पद पर विभूषित किया। करीब पचास वर्षों तक साध्वीप्रमुखा के रूप में रहकर आपने विकास के कई द्वार खोले। तेरापंथ धर्मसंघ में संयमरत करीब पांच सौ साध्वियों की आप मुखिया थी। शांत, सौम्य, धीर गंभीर, विदुषी साध्वी प्रमुखा को शतशः नमन करती हूं।'

इस अवसर पर रेखा बरलोटा, कुलदीप बैद, अशोक बरलोटा, पुष्पा कच्छारा, मुंबई अणुव्रत समिति की कोषाध्यक्ष लतिका डागलिया, अनिता धींग, मीना सुराणा, ताराचंद बरलोटा, विजयश्री डागलिया, स्मिता चोकसी आदि ने साध्वी प्रमुखाजी के प्रति अपनी हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित की। स्थानीय सभा की ट्रस्टी प्रकाश बाई तातेड़ भी उपस्थित थी। अंत में सामूहिक रूप से चार लोगस्स का ध्यान एवं नमस्कार महामंत्र का क्रम भी रहा। आभार ज्ञापन तेयुप दक्षिण मुंबई उपाध्यक्ष व मुंबई सभा के मीडिया प्रभारी नितेश धाकड़ ने किया एवं कार्यक्रम का संचालन दक्षिण मुंबई तेरापंथी सभा के मंत्री दिनेश धाकड़ ने किया।

एरोली

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ की शासनमाता साध्वी प्रमुखाश्री कनकप्रभाजी की स्मृति सभा का आयोजन तेरापंथ सभा भवन ऐरोली में रविवार को किया गया। जिसमें सकल जैन समाज के श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रही। सर्वप्रथम सभा की शुरुआत साध्वीश्री पंकजश्रीजी द्वारा रचित गीतिका के मंगलाचरण से हुई। तत्पश्चात तेरापंथी सभा अध्यक्ष छोगालाल सोनी द्वारा शासनमाता को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। शासनश्री साध्वीश्री कैलाशवतीजी ने ठाणं सूत्र के अनुसार चार प्रकार के पुष्पों पर प्रकाश डालते हुए फरमाया कि शासनमाता का जीवन आंतरिक व बाहरी दोनों ही दृष्टियों से खुशबूदार था उनका महकता जीवन हर एक व्यक्ति को प्रेरणा देता है। साध्वीश्री पंकजश्रीजी ने कहा- 'साध्वी प्रमुखाजी का जीवन वात्सल्य से परिपूर्ण था। यहां हर एक व्यक्ति आकर अपनी प्यास बुझाता, बिन मांगे बहुत कुछ पा लेता था। मेरे ऊपर उनकी अनंत कृपा थी।' साध्वी ललिताश्रीजी एवं साध्वी सम्यक्त्वयशाजी ने श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए शासनमाता के व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व पर प्रकाश डाला। स्मृति सभा में समणी निर्माणप्रज्ञा एवं मध्यस्थप्रज्ञा ने उपस्थित रहकर शासनमाता को श्रद्धांजलि अर्पित की। स्मृति सभा में ब्रह्मकुमारी विश्वविद्यालय से मीना दीदी ने सभा में उपस्थित रहकर शासनमाता को श्रद्धांजलि अर्पित की। स्मृति सभा में श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा मुंबई के मंत्री विजय पटवारी, मुंबई महिला मंडल की मंत्री अल्का मेहता, समाज सेवक दिनेश पारख, वाशी सभा अध्यक्ष सुरेश बाफना, वाशी तेयुप अध्यक्ष नितेश बाफना, कोपरखैरने से पंकज भटेवरा, मुलुंड से सभा अध्यक्ष राकेश टुकलिया, अर्जुन चौधरी, ऐरोली स्थानकवासी समाज से बाबूलाल बोलिया आदि ने अपने विचार प्रकट करते हुए शासनमाता को श्रद्धांजलि अर्पित की। बड़ी संख्या में उपस्थित श्रावक श्राविकाओं ने शासनमाता के उत्तरोत्तर आध्यात्मिक उन्नति की मंगलकामनाएं की। एरोली महिला मंडल संयोजिका किरण कोठारी ने महिला मंडल की तरफ से शासनमाता को भावांजलि अर्पित की। मुलुंड महिला मंडल से सह संयोजिका सुनीता सिंघवी ने भी मंडल की तरफ से भावनाएं प्रकट करते हुए शासनमाता को श्रद्धांजलि अर्पित की। साध्वीश्री शारदाप्रभाजी ने स्मृति सभा का संचालन करते हुए कहा की साध्वी प्रमुखा कनकप्रभाजी ऋतुजा की मंदाकिनी थी। स्मृति सभा में ऐरोली सकल जैन समाज के साथ श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथ समिति ट्रस्ट, तेरापंथ युवक परिषद, तेरापंथ महिला मंडल, किशोर मंडल, कन्या मंडल के सभी सदस्यों की उपस्थिति रही। अंत मे तेयुप अध्यक्ष गौतम चंडालिया द्वारा शासनमाता कनकप्रभाजी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए पधारे हुए सभी महानुभावों का आभार प्रकट किया गया

जोधपुर

तेरापंथ सभा जोधपुर व सरदारपुरा के तत्वावधान में ओसवाल कम्युनिटी हॉल में शासनमाता असाधारण साध्वी प्रमुखाश्री कनकप्रभाजी की स्मृति सभा का आयोजन किया गया। आचार्यश्री महाश्रमणजी की सुशिष्या साध्वीश्री सत्यप्रभाजी, साध्वीश्री कमलप्रभाजी, साध्वीश्री सत्यवतीजी, साध्वीश्री कुंथूश्रीजी, साध्वीश्री प्रमोदश्रीजी, साध्वीश्री उर्मिलाकुमारीजी, साध्वीश्री जिनबाला जी, साध्वीश्री रतिप्रभाजी के पावन सानिध्य में आयोजित इस कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीवृंद के द्वारा नवकार महामंत्र के मंगल मंत्रोच्चार से हुआ।

मंगलाचरण तेरापंथ महिला मंडल द्वारा किया गया। सभाध्यक्ष धनपतराज मेहता ने पधारे हुए सभी धर्मानुरागी भाई-बहनों का स्वागत किया। साध्वी सत्यप्रभाजी व साध्वी कमलप्रभाजी ने कहा कि स्मृति उनकी होती है जिनकी विस्मृति होती है। आपका व्यक्तित्व विलक्षण व अलौकिक था। साध्वी कुंथूश्रीजी व साध्वी सत्यवतीजी ने अपने वक्तव्य में ममतामयी कनकप्रभाजी को अमूल्य निधि, संयम, साधना, सहिष्णुता और वात्सल्य की प्रतिमूर्ति बताया। साध्वी प्रमोदश्रीजी, साध्वी जिनबालाजी, साध्वी रतिप्रभाजी, साध्वी मृदुलयशाजी ने महाश्रमणी कनकप्रभाजी के प्रति श्रद्धाभाव रखते हुए अपने जीवन के प्रेरणादायी संस्मरण सुनाए। सभी साध्वीवृंद द्वारा सामूहिक गीतिका की प्रस्तुति दी गई।

इस अवसर पर महिला मण्डल मंत्री रीना जैन, उपाध्यक्ष मोनिका चोरड़िया, युवक परिषद अध्यक्ष मितेश जैन, मंत्री कैलाश तातेड, प्रोफेशनल फोरम अध्यक्ष पवन बोथरा, अणुव्रत समिति मंत्री शर्मिला भंसाली, महासभा उपाध्यक्ष विजयराज मेहता, हनवंतराज मेहता, सुरेन्द्रराज गेलडा, स्वीटी मेहता ने साध्वी प्रमुखाश्रीजी के प्रति अपनी भावांजलि व्यक्त की।

ओसवाल जनहितकारिणी ट्रस्ट का आभार प्रकट किया गया। आभार ज्ञापन सभा मंत्री महावीर चौपड़ा व कार्यक्रम का कुशल संचालन सभा मंत्री महेन्द्र सुराणा एवं महावीर चौपड़ा ने किया। साध्वीश्री के मंगलपाठ से कार्यक्रम सानंद संपन्न हुआ।

मंगलभावना समारोह का आयोजन

न्यू शिवकासी।

साध्वी उज्ज्वलप्रभाजी एवं सहवर्ती साध्वीवृंद का मंगलभावना समारोह सभा के वरिष्ठ नोरतनमल डागा के निवास स्थान पर आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ प्रियंका एवं मिताली आंचलिया ने नमस्कार मंत्र से किया। अध्यक्ष सुशीला सेठिया ने साध्वीवृंद के सरल स्वभाव एवं उनके कर्तृत्व के बारे में अपने विचार रखे। वरिष्ठ श्राविका संपतदेवी डागा ने कविता द्वारा अपनी भावना रखी। उपाध्यक्ष बेला कोठारी, सज्जन डागा, रानी बरड़िया ने गीतिका प्रस्तुत की। रानी डागा ने अपने भाव को मारवाड़ी कविता में पिरोकर प्रस्तुत किया।

मंत्री कुसुम बैद ने साध्वीवृंद के ज्ञान और स्वभाव की विशेषता को कविता में ढालकर व्यक्त किया। स्वाती बोथरा ने मंगलभावना प्रेषित कौ नोरतन डागा ने अपने विचार व्यक्त किए।

साध्वी अनुप्रेक्षाश्री जी ने उदाहरण द्वारा समझाया कि जो समय पर झुकना सीख लेता है वही समय के समर में जीत हासिल करता है। साध्वी उज्ज्वलप्रभाजी ने कहा कि धर्म का बीज अगर एक बार बो दिया जाता है तो वह फलित जरूर होता है। कार्यक्रम का संचालन उपमंत्री दिव्या आंचलिया ने किया।

महाप्रज्ञ महाप्रयाण दिवस

नोएडा।

साध्वी डॉ० शुभप्रभाजी के सान्निध्य में 'महाप्रज्ञ महाप्रयाण दिवस' का कार्यक्रम आयोजित किया गया। साध्वी शुभप्रभाजी ने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ जी ऐसे महापुरुष हुए जिनका जन्म खुले आकाश में हुआ। अंतरिक्ष से उन्होंने ऊर्जापान किया। आगे चलकर अध्यात्म की गहराइयों में गोते लगाए उनकी प्रज्ञा बचपन से ही विलक्षण थी।

साध्वी कांतयशाजी, साध्वी अनन्यप्रभाजी ने विचार व्यक्त किए। मोतीलाल, सुरेंद्र नाहटा, महिला मंडल अध्यक्ष कविता लोढ़ा, कुसुम बैद, राष्ट्रीय कन्या मंडल प्रभारी अर्चना भंडारी, सभाध्यक्ष रणधीर बैद ने विचार रखे। ममता मालू, तेयुप ने सुंदर संगान किया। महिला मंडल ने मंगलाचरण से कार्यक्रम की शुरुआत की।

'ॐ श्रीं महाप्रज्ञ गुरवे नमः' जप से कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। कार्यक्रम का संचालन वर्षा दुधोड़िया ने किया।

रात्रि में व्रत कार्यशाला का आयोजन किया, जिसमें लगभग ३०-३५ भाई-बहनों की सहभागिता रही।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
2 - 8 मई, 2022

✦ *शिक्षा जगत में नैतिकता की बात, भावात्मक परिष्कार या इमोशनल डेवलपमेंट की बात–ये सब अणुव्रत से ही जुड़े हुए तत्त्व हैं। अणुव्रत व्यक्ति सुधार और समाज सुधार–दोनों दृष्टियों से उपयोगी है।*
–आचार्यश्री महाश्रमण

आचार्यश्री भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस के विविध आयोजन

शाहदरा, दिल्ली

आचार्य भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस शासनश्री साध्वी रतनश्री जी के सान्निध्य में लक्ष्मीनगर क्षेत्र में आयोजित किया गया। आचार्यश्री भिक्षु के २६३वें अभिनिष्क्रमण दिवस पर तेरापंथी सभा, शाहदरा में ॐ भिक्षु-जय भिक्षु जप का अनुष्ठान रखा गया, जिसमें ४०० से अधिक जनों की सहभागिता रही।

रात्रिकालीन कार्यक्रम में लक्ष्मीनगर क्षेत्र में साध्वीश्री जी के सान्निध्य में रखा गया, जिसमें तेरापंथ प्रबोध का संगान व २० मिनट सामुहिक जप-अनुष्ठान के पश्चात भिक्षु धम्म जागरण रखा गया, जिसमें गायक कलाकारों ने अपनी भक्तिमय सुमधुर प्रस्तुतियों से वातावरण भिक्षुमय बना दिया।

तेरापंथी सभा, शाहदरा के अध्यक्ष राजेंद्र सिंघी ने अपने वक्तव्य के माध्यम से विचार रखे। सभी पधारे हुए गणामन्यजनों का स्वागत लक्ष्मीनगर क्षेत्र के संयोजक विकास बोथरा ने किया। कार्यक्रम में तेयुप, दिल्ली के अध्यक्ष, महिला मंडल व स्थान प्रदाता करनीदान नौलखा सहित समस्त क्षेत्रवासियों ने उपस्थित रहकर लाभ लिया। कार्यक्रम का संचालन तेयुप, दिल्ली अध्यक्ष विकास बोथरा ने किया।

जसोल

भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस तेरापंथ महिला मंडल द्वारा सोहनी देवी सालेचा की अध्यक्षता में मनाया गया। तेरापंथ कन्या मंडल ने भिक्षु अष्टकम से मंगलाचरण किया। मंडल अध्यक्ष सोहनी देवी सालेचा ने सबका स्वागत किया व भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस पर अपने विचार व्यक्त किए। महिला मंडल की संरक्षिका पुष्पादेवी बुरड़ ने दस दान के बारे में जानकारी दी।

अंत में मंत्री ममता मेहता ने दस मिनट 'ॐ भिक्षु जय भिक्षु' सामुहिक जाप करवाया तथा आभार ज्ञापन किया।

गदग

तेरापंथ भवन में आचार्य भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस के रूप में मनाया गया। जिसमें सर्वप्रथम ओम भिक्षु जय भिक्षु का जाप किया गया। फिर तेरापंथ प्रबोध का वाचन हुआ। उसके बाद में सभा अध्यक्ष अमृतलाल कोठारी, महिला मंडल की मंत्री विजेता भंसाली, कन्या मंडल प्रभारी सारिका संकलेचा ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। इस कार्यक्रम में लगभग ३५ की संख्या में भाई-बहनों की उपस्थिति रही।

पीलीबंगा

तेरापंथी महासभा के निर्देशानुसार तेरापंथी सभा द्वारा आचार्य भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस के अवसर पर जैन भवन में समणी सचितप्रज्ञा जी के सान्निध्य में धम्म जागरण का कार्यक्रम आयोजित किया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत प्रीति डाकलिया द्वारा गाए मंगलाचरण से हुई। तत्पश्चात महिला मंडल अध्यक्षा विनोद देवी छाजेड़, राजकुमार छाजेड़ और समणीजी ने अपनी सुमधुर आवाज से शमा बांध दिया। कार्यक्रम में अनेक गणमान्य श्रावक-श्राविका उपस्थित रहे।

गुवाहाटी

तेरापंथी सभा के तत्त्वावधान में आचार्य भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस के उपलक्ष्य में धम्म जागरण का आयोजन स्थानीय तेरापंथ धर्मस्थल में किया गया। इस अवसर पर तेरापंथी सभा के अध्यक्ष झनकार दुधोड़िया, उपाध्यक्ष दिलीप दुगड़, मंत्री निर्मल सामसुखा, वरिष्ठ श्रावक उत्तमचंद नाहटा, रामलाल रांका, उपासिका कांता बच्छावत एवं पुष्पा गोलछा सहित सभी संघीय संस्थाओं के सदस्य उपस्थित थे।

अर्हम भजन मंडली एवं शांतिपुर आध्यात्मिक भजन मंडली ने अपनी संगीत लहरियों से कार्यक्रम में समा बांध दिया। इस अवसर पर सरदारशहर निवासी मोनिका बैद का प्रथम वर्षीतप के उपलक्ष्य पर सभी संघीय संस्थाओं द्वारा साहित्य अमृताम् ग्रंथ, फुलाम गमोछा व मंगलभावना पत्रक से अभिनंदन किया गया। इस अवसर पर उपाध्यक्ष दिलीप दुगड़ ने भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस पर संक्षिप्त जानकारी देते हुए मंच संचालन किया। सभाध्यक्ष झनकार दुधोड़िया ने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया।

इचलकरंजी

साध्वी प्रमिलाकुमारी जी आदि साध्वियों का महाराष्ट्र में पदार्पण हुआ। इस अवसर पर कर्नाटक महाराष्ट्र सीमा पर पश्चिम महाराष्ट्र के अध्यक्ष उत्तमचंद पगारिया, इचलकरंजी सभा अध्यक्ष महावीर आंचलिया, महिला मंडल अध्यक्षा जयश्री जोगड़, मंत्री प्रज्ञा आंचलिया, जयसिंहपुर सभा अध्यक्ष विजयराज रुणवाल आदि अनेक श्रावक-श्राविकाओं के साथ साध्वीश्री का स्वागत किया एवं अपनी मंगलभावनाएँ प्रेषित की।

साध्वी प्रमिलाकुमारी जी ने कहा कि महाराष्ट्रीय धरती पर तुकाराम, एकनाथ आदि अनेक संत हुए हैं। साध्वीश्री जी ने इस अवसर पर गीतिका के माध्यम से अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। तथा कर्नाटक सीमा को पार करते हुए महाराष्ट्र में महावीर आंचलिया के फैक्ट्री में पधारे जहाँ आचार्य भिक्षु का अभिनिष्क्रमण दिवस का कार्यक्रम रखा गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीश्री जी द्वारा महामंत्रोच्चारण के साथ हुआ। सर्वप्रथम महावीर की स्वागत भाषण के पश्चात जयश्री जोगड़, विजयराज रुणवाल, ज्ञानार्थी अर्हम आंचलिया और पलक आंचलिया ने अपने-अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

इस अवसर पर आंचलिया परिवार ने गीत की प्रस्तुति दी। साध्वी आस्थाश्री जी और साध्वी विज्ञप्रभा जी ने गीत के माध्यम से आचार्य भिक्षु के प्रति श्रद्धांजलि व्यक्त की। साध्वी प्रमीलाकुमारी जी ने कहा कि आचार्य भिक्षु का व्यक्तित्व व कर्तृत्व बचपन से ही पावरफुल था। साध्वीश्री जी ने अनेक प्रसंगों के माध्यम से आचार्य भिक्षु की औत्पत्यिकी बुद्धि और जागृत प्रज्ञा पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का समापन साध्वीश्री के मंगलपाठ से हुआ। कार्यक्रम का संचालन प्रज्ञा आंचलिया ने किया।

हैदराबाद

साध्वी त्रिशलाकुमारी जी के सान्निध्य में चैतन्यपुरी वासुपूज्य जैन मंदिर के प्रांगण में आचार्य भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस एवं स्वागत समारोह मनाया गया। साध्वीश्री जी का नगर प्रवेश के अवसर पर तेरापंथी सभा द्वारा स्वागत रैली का आयोजन भी ओमनी हॉस्पिटल से जैन मंदिर तक किया गया, जिसमें काफी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित हुए।

कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीश्री द्वारा नमस्कार महामंत्र के साथ हुआ। मंगलाचरण तेरापंथ महिला मंडल की बहनों द्वारा हुआ।

इस अवसर पर साध्वी कल्पयशाजी ने कहा कि संतों का समागम जिस गाँव, नगर, शहर में होता है वह धरा धन्य हो जाती है। भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस पर अपने विचार व्यक्त करते हुए साध्वीश्री जी ने कहा कि आज के दिन आचार्य भिक्षु ने शिथिलाचार के विरुद्ध धर्म क्रांति की थी। आचार्य भिक्षु से पहले भी ना जाने कितनी क्रांतियाँ हुई हैं और उनके बाद भी कितनी क्रांतियाँ हुई होंगी। साध्वी रश्मिप्रभा जी की गीतिका ने पूरी सभा में समा बांध दिया।

साध्वी त्रिशला कुमारी जी ने कहा कि जिन्होंने सत्य के लिए क्रांति की है उनको विरोधियों का सामना करना पड़ा है।

साध्वीश्री जी ने कहा कि हम भगवान महावीर वाणी के आधार पर विशाखापट्टनम से विहार करते हुए हैदराबाद के चैतन्यपुरी में पहुँच गए हैं। तेरापंथी सभा, सिकंदराबाद के अध्यक्ष सुरेश सुराणा, तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्ष अनिता गीड़िया, तेयुप के मंत्री वीरेंद्र घोषल, टीपीएफ के सहमंत्री अणुव्रत सुराणा, अणुव्रत समिति के मंत्री अशोक मेड़तवाल ने साध्वीवृंद का नगर प्रवेश पर अपने भावों द्वारा स्वागत किया।

चैतन्यपुरी के श्रावकों द्वारा गीतिका का संगान किया। वासुपूज्य जैन मंदिर की तरफ से हर्ष कुमार मणोत ने साध्वीश्री और संघ का स्वागत किया। इस अवसर पर अशोक नाबरिया एवं मंदिर ट्रस्ट के अनेक पदाधिकारी उपस्थित थे। कार्यक्रम को सफल बनाने में सुनील सुराणा और तेरापंथी सभा के सहमंत्री धर्मेन्द्र चोरड़िया का विशेष श्रम रहा।

आभार ज्ञापन तेरापंथी सभा, सिकंदराबाद के मंत्री सुशील संचेती द्वारा किया गया।

गांधीनगर, बैंगलोर

शासनश्री साध्वी कंचनप्रभाजी आदि के सान्निध्य में तेरापंथ सभा, गांधीनगर के तत्त्वावधान में आचार्य भिक्षु अभिनिष्क्रमण समारोह मनाया गया। साध्वीवृंद द्वारा नमस्कार महामंत्र उच्चारण के पश्चात तेरापंथ महिला मंडल द्वारा भिक्षु अष्टकम के संगान द्वारा मंगलाचरण किया गया।

साध्वी कंचनप्रभाजी ने कहा कि महान आत्मार्थी संत थे–आचार्य भिक्षु। निर्मल चारित्राराधना के लिए सर्वात्मना समर्पित संत थे–आचार्य भिक्षु। शासनश्री साध्वी मंजुरेखा जी ने कहा कि आचार्य भिक्षु ने भगवान महावीर का अहिंसा दर्शन स्वयं के जीवन में जन-जन तक पहुँचाया, उनकी अंतरप्रज्ञा जागृत थी। आज के दिन उन्होंने बगड़ी शहर से अभिनिष्क्रमण किया।

साध्वी उदितप्रभाजी, साध्वी निर्भयप्रभाजी एवं साध्वी चेतनाश्री जी ने विविध जीवन प्रसंगों से आचार्य भिक्षु के महान व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला। ललित सेठिया ने गुरुदेवश्री तुलसी द्वारा रचित गीत का संगान किया। तेरापंथ महिला मंडल से निर्मला गादिया ने विचार रखे। सज्जन पितलिया ने आभार ज्ञापन किया। तेजकरण, विजयराज मरोठी आदि उपस्थित थे। संचालन ललित सेठिया ने किया।

स्वागत समारोह

नोएडा।

डॉ० साध्वी शुभप्रभाजी के पदार्पण पर नोएडा श्रावक समाज की ओर से स्वागत कार्यक्रम रखा गया। साध्वी शुभप्रभाजी ने कहा कि अच्छाई, बुराई दो शब्द हैं। अच्छाई एलआईसी की तरह एवं बुराई को रोमिंग की तरह समझें जिसे सुनने एवं बोलने दोनों में चार्ज लगता है।

जिंदगी को अच्छा बनाने के लिए कुछ टिप्स देते हुए उन्होंने कहा कि छत कहती है सोच को अच्छा रखो, घड़ी कहती है समय की कद्र करो, जमीन संदेश देती है परंपराओं से जुड़े रहो, दीवार जोड़ना सीखो तोड़ना नहीं। आश्रव स्थल पर बना गेट कहता है कदम बढ़ाओ गति करो, दर्पण अपने आपको देखने की प्रेरणा देता हैं धर्म भी अपने आपको देखने की प्रेरणा देता है।

साध्वी कांतयशाजी, साध्वी अनन्यप्रभाजी ने विचार रखे। साध्वी मंदारयशाजी ने पूर्व चातुर्मासिक क्षेत्र में अपनी ओर से सबका स्वागत किया। सभाध्यक्ष रणधीर बैद, महिला मंडल अध्यक्षा कविता लोढ़ा, राष्ट्रीय कन्या मंडल प्रभारी अर्चना भंडारी, मोतीलाल नाहटा, टीपीएफ मंत्री प्रसन्न सुराणा, ज्ञानशाला संयोजक मुकेश दुधोड़िया, तेयुप से कनिष्ठ बैद ने भावों की अभिव्यक्ति दी। महिला मंडल ने सामुहिक गीत का संगान किया। कार्यक्रम का संचालन दीपिका चोरड़िया ने किया।

साध्वीप्रमुखाश्रीजी के प्रति भाव पुष्पांजलि

● **पं० बालकृष्ण कौशिक** ●

कनकप्रभाजी स्वर्णप्रभा सी
यथा नाम तथा गुणवती सी

संयम संग मर्यादित जीवन
तेज पुंज सा सुरभित मन
आलोकित कर तेरापंथ उपवन
आचार्य त्रय संग समर्पण
निज पर शासन फिर अनुशासन
तुलसी गणी का युगीन चयन
महाप्रज्ञ से महामनस्वी के
चिन्तन मनन का अनुवर्तन
वर्तमान आचार्य को किया नमन
महाश्रमण को सहस्वर वंदन
निज परित्याग, पंथ पथ दर्शन
पद यात्रा कर श्रमित देह कण
अवियव सत को शत-शत वन्दन
दीर्घ युग का तेरापंथ में
पटाक्षेप सा है परिवर्तन
मातृ शक्ति तेरापंथ माता
प्रभु पथ में निर्वाण सघन
जन-जन करता है अभिनंदन

शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी के प्रति काव्यांजलि

शासनमाता सुखदाता

● साध्वी निर्मलयशा ●

शासनमाता सुखदाता मां यादे उदयायी
स्नेहिल सिंचन पाने को ये कलिया उकलायी

किन अणुओं से जननी ने निर्माण किया तेरा
मातृ ह्रदया ने पलपल, निज करूणा बरसाई।

ओजस्वी पलकें खोली, सावन कृष्णा तेरस
सावन की रिमझिम बरसा, पा धरणी हरसायी।

कला को प्रभु तुलसी ने, सुन्दर आकार दिया
गुरु महाप्रज्ञ सुखसाया, महाश्रमण महर पायी।

अनुत्तर संयम समता, ममता की मूरत थी।
पौष्टिक संपोषण देकर, गण बगिया विकसायी

शुभंकर व्यक्तित्व तुम्हारा, तेजस्वी कर्तृत्व
नेतृत्व निराला तेरा, लख जनता चकरायी।

गुरु निष्ठा गण निष्ठा श्रम निष्ठा अनुपम थी
गुरु चरण शरण में ही, अन्तिम सांसे मनयायी।

पग-पग पर रक्षा करना, ईठा पीड़ा हरना
मंत्राक्षर नाम तुम्हारा, तू अद्भुत शक्तिदायी।।

तर्ज : प्रभु पार्श्व देव

प्रमुखाश्री महासमर जीत्यो

● साध्वी प्रणवप्रभा ●

महाश्रमणीजी महासमर जीत्यो
प्रमुखाश्री महासमर जीत्यो
धन्य धन्य शासणमाता रो पद रहग्योरी तो

घोर वेदना में समता राखी थी कण कण में
जागरूक बण सफल कियो हो हर पल हर क्षण नै
महाश्रमणी -----

महानिर्जरा महातपस्वी गणराजा कीन्ही
अमर बण्यो इतिहास देन भैक्षवगण नै दीन्ही
प्रमुखाश्री ------

समराज्ञी बण कर्म कटक स्यूं जबरा थे द्वंद्व
खनै राखतां संबल पाता, अन्तराय री ताप
प्रमुखाश्री --------

सुरंगा स्यूं भी सतिशेखरे, कराइज्यो संभाल
थे हो गण रा शासनमाता, म्है हां थारां बाल
महाश्रमणी-------

लय : तावड़ा धीमो पड़जारे

हम भूल ना पाएं

● साध्वी मलयप्रज्ञा ●

शासनमाता! शासनमाता गए कहां? गए कहां?
हमें छोड़ के मुंह मोड़ के।
यादें रह- रह आए, हम भूल ना पाएं
भूल ना पाएं, कैसे दिल को समझाएं ---

कोलकाता की पुण्य धरा पे, जन्म लिया
सद्संस्कारित जीवन, चन्देरी में किया।
तेरापंथ उद्गम स्थल में, संयम पाया।
यक्षदेव ने तुलसी को, संकेत दिया।
बहन कला ये देगी, लंबी सेवाएं--

कार्यकुशलता और सुघड़ता, थी अनुपम
गुरु आज्ञा, मर्यादा निष्ठा, थी उत्तम।
विनय, समर्पण, सेवा, समता का संगम।
रहता गण हित चिंतन तेरा, सुंदरतम।
तव पुरूषार्थ की गाथा का पाठ पढ़ाएं---

पाई जिसने भी सन्निधि वो, बना दीवाना।
इन नयों का जादू ही सबने माना।
बात-बात में संस्कारों के, घट भरते।
जीने का गुर पाकर लाखों, सिर झुकते।
तब उपकारों से क्या? उऋण हो पाएं ना हो पाए-----

भूल चूक में अनुशासन था, नंबर वन।
दे वात्सल्य पुनः भरते थे, नव पुलकन।
दे आकार सलौना तुमने, रूप निखारा।
गणीवर को नाज है तुम पर बहुमान दिराएं।

पुण्याई से गुरुत्रय का, सानिध्य मिला।
जीवन शतदल हरपल पर तेरा खिला-खिला।
उग्र बिहारी महाश्रमण ने साथ दिया।
अंतिम आराधना करवाकर तार दिया।
श्रद्धांजलि में आस्था सुमन चढ़ाएं।
सुमन चढ़ाएं शीश झुकाएं -----

तर्ज : परदेसी परदेसी

श्रद्धा शीश झुकाएं

● साध्वी निर्वाणश्री ●

शासनमाते! तव चरणों में श्रद्धा शीश झुकाएं।
तेरी मंजुल स्मृतियां कर शक्ति अभिनव पाएं।।

धीर-वीर व्यक्तित्व तुम्हारा तुम हो श्रद्धा संबल
जो भी आया पास तुम्हारे पाया उसने जीने का बल।
गुणसमदर की लहर-लहर को कैसे आज बताएं।।

गण के एक-एक पौधे को सींचा तुमने जीभर।
रहा एक ही चिंतन हर पल संघ धरा हो उर्वर।
गुरुभक्ति व गणनिष्ठा का पाठ सदा पढ़ते जाएं।।

अधिकारों के युग में कर्त्तव्यों की कहानी कहती
तन की तीव्र वेदना को समता से हंसते सहती।
नमन करें उस महाशक्ति को गूंजे जिनकी आज ऋचाएं।।

शासनमाता स्मृति अर्घ्य

● मुनि भव्यकुमार ●

जय-जय शासन माता
जन-जन मन गाता, थांरो-थांरो उपकार
जद-जद देखता दीदार, मिटतो सकल क्लेश विकार
शासनपति रे चरणां काड्यो, सारी साधना रो सार।।

चित्त प्रसन्नता हरदम रहती आया कष्ट महान हो
सहनशीलता री प्रतिमूर्ति वत्सलता प्रतिमान हो
देकर चित्त समाधि सब नै पाता मन में हर्ष अपार।।

प्रवचन शैली, नई नवेली बात सदा ही आंवती
कोई भी सबजेक्ट इसो नहीं जिन पर कलम न चालती
अजब-गजब बौद्धिकता ही थांरी रचना रो संसार।।

प्रेरणा, प्रोत्साहन देता, करता सारणा-वारणा
जोरां जगाता साध-सत्यां में कार्यदक्ष मन भावणा
श्रावक-श्राविका में भरता गहरा संघ रा संस्कार

गुरुवां रो विश्वास जित्यो सहज समर्पण भाव स्यूं
बण विनम्र तर्क भी रखता बहता निज स्वभाव स्यूं
अपणी कार्य शैली स्यूं बण्या थे सगलांरा गलहार

महाश्रमणी, साध्वीप्रमुखाश्री, संघ महानिदेशिका
असाधारण, शासनमाता जीवन री प्रतिलेहिका
गुरुवरां री किरपा सवाई पाई महिमा अपरम्पार ।।

गुरु तुलसी स्यूं दीक्षित, शिक्षित तुलसी आत्माराम हा
महाप्रज्ञ री प्रज्ञा, प्रेक्षा प्रेरणा अभिराम हा
महाश्रमण सा देव पुरुष स्यूं पचख्यो अंतिम में संथार ।।
महाश्रमण सा देव पुरुष चरणां में पहुंच्या स्वर्ग मंझार।।

बात - बात में याद आसी थांरी शिक्षा महासती
साझ दिराज्यो नन्दनवन रे पुष्पां ने हे महासती
थारै साधना पथ चाल म्हैं भी पहुंचा मुक्ति द्वार

लय : शासन कल्पतरु---

शासनमाता हरपल यादां आवै है

● साध्वी सहजयशा ●

शासनमाता प्रमुखा हरपल यादां आवै है।
गुरु सुमना री भीनी सौरभ महीतल में महकावै है।

सगला संत सत्यां नै सीख ग्लोनी देकर अमृत बरसाता
छोटा-छोटा नवदीक्षित सतियां पर भारी कृपा रखवाता।
मन मंदिर में ममता मूरत उन्नति राह दिखावै है।

थांरी गुरु भक्ति री शक्ति निराली गण अनुरवित ही न्यारी
थांरी प्रवचन शैली ही अलबैली काव्य कुशलता कविप्यारी।
लेखन सम्पादन नै सारा सुधीजन शीश चढ़ावै है।

म्हांनै चरण कमल री पावन सेवा माघ महोत्सव पर मिलती।
सबनै ग्रास दिराता कार्य सिखाता जीवन फुलबारी खिलती
स्वाध्यायरी बणणै री थांरी सीखड़ली मन भाव है।

शासनमाता थे बड़भागी गुरुवर चरणां में अन्तिम श्वांस लिया।
थांरी तीजो मनोरथ सिद्ध हुयो थे समता रो संदेश दियो।
'सहजयशा' ऊर्ध्वारोहण री ऊर्जा थांस्यू पावै है।।

तर्ज : माटी री आ

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
2 - 8 मई, 2022

✦ *जीवन की एक उपलब्धि होती है प्रसाद की प्राप्ति। प्रसाद के संदर्भ में कहा गया है कि गुरु के प्रसाद की इच्छा रखनी चाहिए। प्रसाद का अर्थ है प्रसन्नता।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

तेयुप के विविध कार्यक्रमों के आयोजन

सेवा कार्य

साउथ हावड़ा।

तेयुप साउथ हावड़ा ने अपने सामाजिक दायित्व का निर्वाहन करते हुए नेत्रदानी स्व० राजू देवी नाहटा की स्मृति में बादामी देवी आश्रम के ३० बच्चों को सुबह का नाश्ता, फल एवं मिठाई दिया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के संगान के साथ किया। अध्यक्ष बिरेंद्र बोहरा ने सभी का स्वागत-अभिनंदन किया। कार्यक्रम में सहमंत्री अमित बेगवानी, सह-संयोजक दीपक नखत सहित रोहित बैद, निखिल बांठिया एवं परिवार से निशांत दुगड़ की उपस्थिति रही। आभार ज्ञापन सह-संयोजक दीपक नखत ने किया।

धम्म जागरण का आयोजन

बैंगलुरु।

तेयुप के तत्त्वावधन में प्रज्ञा संगीत सुधा द्वारा भिक्षु स्वामी की तेरस के उपलक्ष्य में धम्म जागरण साध्वी लावण्यश्रीजी के सान्निध्य में सुगनचंद, पवन, जितेंद्र चोपड़ा के निवास स्थान पर आयोजन किया गया।

साध्वीश्रीजी द्वारा नमस्कार महामंत्रोच्चार से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। सभी का स्वागत पवन चोपड़ा ने किया। साध्वी लावण्यश्रीजी ने अपने उद्‌गार व्यक्त किए। साध्वी सिद्धांतश्री जी, साध्वी धैर्यप्रभाजी व साध्वी दर्शितप्रभाजी ने गीतिका की प्रस्तुति दी।

भक्ति संध्या में प्रज्ञा टीम से ललित सेठिया, नवीन बरड़िया, जितेंद्र धोका, अरविंद बैद, गगन बरड़िया, प्रदीप चोपड़ा, विकास बाबेल, दीपक बाबेल, आदित्य सेठिया व यश सेठिया द्वारा भक्ति संध्या में प्रस्तुति दी।

तेयुप से अध्यक्ष विनय बैद, मंत्री प्रवीण बोहरा, सहमंत्री विवेक मरोठी, कोषाध्यक्ष सुरेश संचेती, रजत बैद व आलोक कुंडलिया सहित परिवारजन व कई श्रद्धालु उपस्थित रहे। संचालन संयोजक प्रसन्न धोका ने किया। सभी का आभार संगठन मंत्री जितेंद्र चोपड़ा ने किया।

एक शाम प्रभु महावीर के नाम

सूरत।

तेयुप द्वारा एक शाम प्रभु महावीर के नाम विशाल भक्ति संध्या का आयोजन किया गया। लगभग ४००० से अधिक लोग भक्ति संध्या में उपस्थित थे तथा २०००० से अधिक लोगों ने भक्ति संध्या को सोशल मीडिया के माध्यम से लाइव देखा।

तेयुप अध्यक्ष गौतम बाफना ने पधारे हुए सभी मेहमानों का एवं कार्यक्रम के प्रायोजकों का स्वागत-अभिनंदन किया और सभी को तेयुप की गतिविधियों से अवगत करवाया।

भक्ति में मुख्य अतिथि के रूप में राज्यमंत्री (गुजरात सरकार) हर्षभाई संघवी पधारे हर्ष भाई ने कहा कि तेरापंथ समाज का प्रथम दिन से आज तक सतत सहकार प्राप्त होता रहा है। तेरापंथ समाज आध्यात्मिक कार्यों के साथ सामाजिक कार्यों में भी सदैव आगे रहता है। हर्ष भाई संघवी का सम्मान जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा के अध्यक्ष हरीश कावड़िया, तेयुप अध्यक्ष गौतम बाफना एवं मंत्री अभिनंदन गादिया ने किया।

अभातेयुप राष्ट्रीय उपाध्यक्ष जयेश मेहता एवं सहमंत्री भूपेश कोठारी भी कार्यक्रम में उपस्थित थे। इंटरनेशनल ट्रंप प्लेयर आमिर बियानी एवं गुरु भक्त गायक पिंटू स्वामी की जुगलबंदी ने लोगों को भक्ति में सराबोर कर दिया। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में तेयुप पदाधिकारी एवं संपूर्ण कार्यकारिणी का विशेष सहयोग रहा।

रक्तदान शिविर

पर्वत पाटिया।

अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप द्वारा रक्तदान शिविर का आयोजन तेरापंथ भवन में किया गया। जिसमें ५१ यूनिट रक्त एकत्रित किया गया। इस शिविर में सरदार वल्लभ भाई पटेल ब्लड बैंक ने अपनी सेवा प्रदान की। शिविर के सफल आयोजन एवं पूर्व तैयारी में पर्यवेक्षक एवं उपाध्यक्ष-प्रथम प्रदीप पुगलिया, संयोजक प्रशांत महनोत, पंकज बुच्चा, अध्यक्ष चंदप्रकाश परमार, मंत्री भरत जैन, उपाध्यक्ष-द्वितीय दिलीप चावत सहित अनेक पदाधिकारियों एवं सदस्यों का सहयोग रहा।

इस शिविर में सभा अध्यक्ष कमल पुगलिया, सभा सहमंत्री एवं तेयुप परामर्शक अनिल चौधरी, अभातेयुप से सीपीएस के राष्ट्रीय सहप्रभारी कुलदीप कोठारी सहित अनेक गणमान्यजनों की उपस्थिति रही।

रक्तदान शिविर का आयोजन

सूरत।

शहीद दिवस के उपलक्ष्य में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के साथ सहयोगी संस्था से जुड़कर तेरापंथ युवक परिषद ने ६ स्थानों पर रक्तदान शिविर किया। यह रक्तदान शिविर यूनिवर्सिटी और कॉलेजों में हुए। युवक-युवतियों ने बड़े उत्साह के साथ भाग लिया। ६ रक्तदान शिविर में ४५२ यूनिट रक्त एकत्रित किया गया।

वीर नर्मद साउथ गुजरात यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर के०एन० चावड़ा रक्तदान शिविर में पधारे। आपने युवकों की रक्तदान के प्रति जागरूकता की सराहना की। (youth for gujarat president) ने रक्तदान शिविर में अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई।

रक्तदान शिविर में तेयुप अध्यक्ष गौतम बाफना, एमबीडीडी राष्ट्रीय सह-प्रभारी सौरभ पटावरी, पदाधिकारी, कार्यकारिणी सदस्यों एवं एबीवीपी के सदस्यों की अच्छी उपस्थिति रही।

रक्तदान शिविर सुचारु रूप से चले इसमें तेरापंथ किशोर मंडल एवं एमबीडीडी प्रभारी श्रेयांस सिरोहिया, सतीश संकलेचा, रितेश घोषल, तेजू भाई मंडोत, पंकज बंब का विशेष सहयोग रहा।

विशेष सम्मान

गंगाशहर।

एपेक्स हॉस्पिटल परिवार की तरफ से बीकानेर यूनिट के उद्‌घाटन समारोह में आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर गंगाशहर द्वारा मानव सेवा करने के लिए तेयुप ट्रस्ट गंगाशहर को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर तेयुप ट्रस्ट के ट्रस्टी महावीर फलोदिया और ऋषभ लालाणी के साथ-साथ किशोर मंडल संयोजक कुलदीप छाजेड़ ने कार्यक्रम में भाग लिया व टीम की ओर से यह विशेष सम्मान ग्रहण किया।

सेवा कार्य

साउथ हावड़ा।

तेयुप, साउथ हावड़ा ने अपने सामाजिक दायित्व का निर्वाहन करते हुए गर्मी के मौसम में नींबू पानी पिलाकर लोगों के मन एवं शरीर को राहत प्रदान करवाया। सेवा का यह कार्यक्रम क्षेत्र के बंगवासी मेट्रो के समीप आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के संगान के साथ किया। अध्यक्ष बिरेंद्र बोहरा ने सभी का स्वागत किया।

कार्यक्रम में हावड़ा के समाज सेवी एवं पूर्व पार्षद शैलेश राय, परिषद के सलाहकार समिति सदस्य मनोज बोहरा, अनुविभा के राष्ट्रीय मीडिया संयोजक, पंकज दुधोड़िया उपस्थित रहे। बंगवासी मोड़ पर १००० लोगों को नींबू पानी पिलाकर राहत प्रदान किया गया।

कार्यक्रम में उपाध्यक्ष मनीष बैद, उपाध्यक्ष ज्ञानमल लोढ़ा, मंत्री गगन दीप बैद, सहमंत्री राहुल दुगड़, कोषाध्यक्ष विजयराज पगारिया सहित अनेकजनों की उपस्थिति रही। आभार ज्ञापन पर्यवेक्षक अमित बेगवानी ने किया।

शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्रीजी के प्रति

शासनमाता है सुखदाता जन-मन

● **मुनि अर्हत्‌कुमार** ●

युगप्रधान गुरु तुलसी कर स्युं, मानस जीवन पायो रे
कलापूर्ण जीवन जीयो, सबने समझायो रे

त्रय आचार्यों री सेवा कर, गण रो सुयश बढ़ाओ रे
नई ऋचांग लिखकर नव, इतिहास बणायो रे।।

साहित्य संपदा देख-देख कर, विद्वत जन चकरावे रे
काव्यधारा रो अक्षर-अक्षर, अमृत बरसावे रे।।

असधारण महाश्रमणी रो, शुभ संबोधन पायो रे
संघ महानिर्देशिका बन, शासन महकायो रे।।

चंदेरी री चंदनी आ, जग में आलोक फैलायो रे
अमृत महोत्सव रे शुभ अवसर, गण उत्सव धायो रे।।

दीपशिखा बन युग-युग तक, जन-जन ने मार्ग दिखायो रे
होली पावस पर अनशन कर, जीवन सफल बणायो रे।।

लय : होली आई रे---

व्यक्तित्व विकास कार्यशाला

बैंगलुरु।

अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप द्वारा व्यक्तित्व विकास कार्यशाला 'युवा गोष्ठी' का आयोजन मुनि अर्हत कुमार जी, मुनि भरत कुमार जी व मुनि जयदीप जी के सान्निध्य में आयोजित हुई। नमस्कार महामंत्र व मुनिश्री द्वारा सामुहिक प्रार्थना से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ।

तेयुप अध्यक्ष विनय बैद ने स्वागत वक्तव्य दिया। मुनि भरत कुमार जी ने युवा शक्ति की धर्म प्रभावना पर प्रकाश डाला।

मुनि अर्हत कुमार जी ने कहा कि आज कई व्यक्ति तन से युवा हैं, लेकिन मन से बूढ़े होते हैं। व्यक्ति में सर्वप्रथम पॉजिटिव थिंकिंग होनी चाहिए, कुछ कर गुजर जाने की ललक होनी चाहिए।

कार्यक्रम में तेयुप उपाध्यक्ष भेरूलाल पोकरना, सहमंत्री विवेक मरोठी, अरविंद सिंघी, मोहित सुराणा, रजत बैद, विमल धारीवाल, अशोक कुंडलिया, ओमप्रकाश चावत, रवि जैन सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं सदस्यों की उपस्थिति रही।

अभातेयुप नेत्रदान प्रभारी नवनीत मूथा ने कहा कि मुनिश्री के आगमन से युवाओं में नया जोश उभरा है। अवश्य ही मुनिश्री की प्रेरणा से युवाओं में धर्मसंघ के प्रति ऊर्जा बढ़ेगी एवं सभी का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन परिषद मंत्री प्रवीण बोहरा ने किया।

भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस का आयोजन

दिल्ली।

साध्वी शुभप्रभाजी के सान्निध्य में भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस कीर्तिनगर में आयोजित किया गया। साध्वी शुभप्रभाजी ने अपने उद्‌गार व्यक्त किए।

साध्वी कांतयशाजी, साध्वी मंदारयशाजी, साध्वी अनन्यप्रभाजी ने अपने विचार व्यक्त किए। अभातेमम के तत्त्वज्ञान प्रभारी मंजु भूतोड़िया, सरोज सुराणा, राजू मणोत, मानसरोवर अध्यक्ष कमल खटेड़, भूतपूर्व अणुव्रत अध्यक्ष अशोक संचेती ने अपने विचार व्यक्त किए। महिला मंडल ने गीत से मंगलाचरण किया। कार्यक्रम का संचालन अखिल भारतीय महिला मंडल की पूर्व महामंत्री सुमन नाहटा ने किया।

साध्वी शुभप्रभाजी ने नवाह्निक अनुष्ठान के साथ मंगलभावना पर प्रवचन किया। साध्वी कांतयशाजी, साध्वी मंदारयशाजी, साध्वी अनन्यप्रभाजी ने क्रमशः गीत का संगान किया। रात्रि में धर्म जागरण का आयोजन किया गया।

✦ *पुण्य और पाप दोनों बंध हैं। एक सोने की बेड़ी है तो दूसरी लोहे की, किंतु आदमी को पाप कर्मों से बचने का यथासंभव प्रयास करना चाहिए।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

2 - 8 मई, 2022

विकार से दूर होकर अच्छे संस्कार प्राप्त करने की दिशा में आगे बढ़ें : आचार्यश्री महाश्रमण

तारानगर, २० अप्रैल, २०२२

दिव्य दिवाकर, शांत सुधाकर आचार्यश्री महाश्रमण जी आज १२ किलोमीटर विहार कर तारानगर में पधारे। तारानगर का जन-जन पुज्यवर की अभिवंदना में पलक पावड़े बिछाए उपस्थित था। महामनीषी ने पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि दुनिया में धर्म चलता है, अधर्म भी चलता है। शांति का मार्ग धर्म है, अध्यात्म है। अधर्म यानी हिंसा-झूठ आदि अशांति कारक तत्त्व भी होते हैं और आत्मा को पतित बनाने वाले होते हैं।

धर्म के तीन प्रकार बताए गए हैं—अहिंसा धर्म है, संयम धर्म है, तप धर्म है। साधु तो गृहत्यागी होता है। वह तो उच्चकोटि की अहिंसा, संयम और तप की आराधना करने वाला होता है। साधु के पाँच महाव्रत होते हैं। पहला व्रत है सर्व प्राणातिपात विरमण यानी अहिंसा। साधु के रात्रि भोजन विरमण होता है, वह भी अहिंसा का ही रूप है, साथ में संयम भी हो जाता है।

साधु तो रात में सिर्फ धर्म साधना करे। रात्रि भोजन का त्याग गृहस्थ के लिए हितकारी होता है, अहिंसा की साधना हो जाती है, यह एक प्रसंग से समझाया। साधु भिक्षा से अपना काम चलाता है। गृहस्थ जीवन में जितना हो सके अहिंसा के पथ पर चलना चाहिए। संकल्पजा हिंसा से तो गृहस्थ को भी बचना चाहिए।

अणुव्रत के छोटे-छोटे नियम भी अहिंसा से जुड़े हुए हैं। बड़ी झूठ गृहस्थ न बोले। इससे आत्मा मलीन बनती है। वृत्ति-आजीविका प्राप्ति में भी धर्म को आदमी जोड़ दे। अनैतिकता, बेईमानी, धोखाधड़ी मेरे द्वारा न की जाए। जीवन में सच्चाई-ईमानदारी रहे। ईमानदारी देवी भगवती की फोटो दुकानदारी में रहे।

धर्म स्थान में धर्म होना अच्छा है, पर कर्मस्थान में भी अपने ढंग का धर्म होना चाहिए। गृहस्थ जीवन में नशीले पदार्थों के सेवन से बचें। हम अहिंसा यात्रा कर रहे थे, उसमें तीन बातें बता रहे थे, सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति। गृहस्थ जीवन में संयम रहे। नशा कठिनाईयाँ पैदा कर सकता है। एक घटना से यह समझाया कि नशामुक्ति से जीवन सुधर सकता है।

प्रेक्षाध्यान से हमारे क्रोध, मान, माया, लोभ ये कषाय शांत हो सकते हैं, आत्मा निर्मल बन सकती है। विकार दूर होकर अच्छे संस्कार रहेंगे। बच्चों में ज्ञान के साथ अच्छे संस्कार आएँ। जीवन विज्ञान से ये कार्य हो सकते हैं। बच्चे अच्छे संस्कारित होंगे तो आने वाली पीढ़ी अच्छी हो सकती है। धर्म एक ऐसा तत्त्व है, जो हमारी आत्मा का कल्याण करने वाला है।

धर्म से अनेक समस्याओं का समाधान हो सकता है। अहिंसा, संयम और तप से जीवन अच्छा रह सकेगा। ये अहिंसा, संयम, तप रूपी धर्म हमारे जीवन में रहे। जितना रह सके, उतना रखने का प्रयास करें।

आज इस थली की यात्रा में तारानगर आना हुआ है। सन् २००० में गुरुदेव महाप्रज्ञजी ने मर्यादा महोत्सव किया था। एक दिन का समय है, फिर भी अनेक श्रद्धालु यहाँ पहुँचे हैं। अच्छी जागरूता, भावना, कर्तव्यनिष्ठा है। तारानगर के सभी निवासी-प्रवासी लोगों में आध्यात्मिकता, नैतिकता की चेतना बनी रहे। शहर में शांति व चित्त समाधि रहे, लोगों में सद्भावना रहे। संयम की चेतना भी रहे।

मुख्य नियोजिका जी ने कहा कि भारतीय परंपरा में तीन चीजों को दुर्लभ बताया गया है—कल्पवृक्ष, कामधेनू और चिंतामणी रत्न—ये तीनों भौतिक आकांक्षाएँ पूर्ति करते हैं। तुलसीदास जी ने कहा है—संत समागम हरिकथा, तुलसी दुर्लभ दोय। तारानगरवासियों को संत समागम व आचार्यप्रवर का प्रवचन अमृत वाणी के रूप में सुनने का अवसर मिल रहा है। शंकराचार्य ने कहा है कि मुमुक्षु भाव, मनुष्यत्व व महान व्यक्तियों की सन्निधि मिलना दुर्लभ है। आज ये सब आपको उपलब्ध है।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में मुनि ऋषभ कुमार जी जो तारानगर से हैं, अपनी अंतर्भावना अभिव्यक्त की। समणी मृदुप्रज्ञाजी ने भी अपने भाव अभिव्यक्त किए।

यहाँ के विधायक नरेंद्र बुड़निया, तेरापंथ महिला मंडल, सभाध्यक्ष राजेंद्र बोथरा, तेयुप, अशोक बरमेचा, सभा सदस्य, कन्या मंडल, मुमुक्षु रोशनी लुणिया, सरीता बैद, अणुव्रत समिति से वीरेंद्र सिंह राठौड़, राजस्थान सेवा संस्थान से ओम कड़वासल ने पूज्यवर के स्वागत में अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने आचार्य महाप्रज्ञ जी द्वारा रचित गीत 'आओ स्वामीजी' का सुमधुर संगान किया।

सार-संभाल यात्रा का आयोजन

अहमदाबाद।

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप द्वारा अहमदाबाद से (कांकरिया-मणिनगर क्षेत्र) में सार-संभाल यात्रा का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के साथ किया गया। दीपक संचेती, हनुमान भुतोड़िया एवं संदीप बरड़िया ने विजय गीत की प्रस्तुति दी।

तेयुप अध्यक्ष ललित बेगवानी ने स्वागत वक्तव्य के साथ युवा शक्ति का अभिवादन किया। कांकरिया सभा उपाध्यक्ष हंसराज सेखानी ने युवाओं को सामाजिक कार्यों में पूरे जोश के साथ कार्य करने और तेयुप से जुड़े रहने की प्रेरणा दी। तेयुप अहमदाबाद के पूर्व अध्यक्ष वीरेंद्र मुणोत ने मोबाइल एप्प के बारे में जानकारी दी। थली युवा संघ के पूर्व अध्यक्ष रवि बैद का सहयोग रहा। अभातेयुप सदस्य अपूर्व मोदी, राजेश चोपड़ा ने अपनी भावनाएँ व्यक्त की।

तेयुप उपाध्यक्ष अरविंद संकलेचा ने संस्कार पर संबोधित करते हुए युवाओं को युवादृष्टि के सदस्य बनने का आह्वान किया। तेयुप उपाध्यक्ष पंकज घीया ने तेयुप मोबाइल एप्प के बारे में गताया। सहमंत्री प्रथम अतुल सिंघवी ने सीपीएस एवं सहमंत्री द्वितीय गौतम बरड़िया ने एमबीडीडी, कोषाध्यक्ष दिलीप भंसाली ने सामायिक के बारे में जानकारी दी। संगठन मंत्री विशाल भरसारिया ने संगठन पर विचार व्यक्त किए एवं संस्कारक आनंद बोथरा ने जैन संस्कार विधि से कार्यों की शुरुआत करने की बात कही।

कार्यक्रम में लगभग ६०-१०० युवा एवं किशोर साथियों की उपस्थिति रही। अभातेयुप प्रबुद्ध विचारक मुकेश गुगलिया ने युवा शक्ति को संबोधित कर युवा शक्ति में जोश भर दिया। कार्यक्रम को सफल बनाने में निरंजन गंग, मुकेश श्यामसुखा, दिलीप पारख, कांति दुगड़, राकेश बैद, पवन संचेती, सुधीर बरड़िया, संजय बरड़िया का विशेष सहयोग रहा। कार्यक्रम का संचालन कार्यसमिति सदस्य मनोज सिंघी ने किया। किशोर मंडल संयोजक हिमांशु वडेरा ने किशोर मंडल के कार्यों की जानकारी दी।

कार्यक्रम में कांकरिया सभा मंत्री मनोज लुणिया एवं दीपक लुणिया, चंपालाल गांधी, अहमदाबाद सभा के मंत्री सुनील बोहरा, रायचंद गोलछा, अशोक दुगड़, राधेश्याम दुगड़, राजेश बरमेचा, संजीव छाजेड़ एंव गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति रही।

तेयुप मंत्री कपिल पोखरना ने सभी के प्रति आभार ज्ञापित किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
2 - 8 मई, 2022

✦ *धर्म का ही एक महत्त्वपूर्ण अंग है सच्चाई। नैतिकता सच्चाई से जुड़ा हुआ तत्त्व है।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

जो भीतर में रहता है उसे किसी प्रकार का भय नहीं रहता है : आचार्यश्री महाश्रमण

मेलुसर, २३ अप्रैल, २०२२

अहिंसा यात्रा प्रणेता अपनी जन्मभूमि की ओर अग्रसर होते हुए आठ किलोमीटर का विहार कर मेलूसर स्थित मालू परिवार के फार्म हाउस पर पधारे। मुख्य प्रवचन में तेरापंथ के महासूर्य आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि जैन आगमों में एक है–उत्तराध्ययन। उसमें युद्ध की बात बताई गई है। युद्ध भी एक ऐसा युद्ध जो स्वयं के साथ किया जाए। अपने साथ लड़ो, अपनी आत्मा से लड़ो। बाहर के युद्ध से क्या मतलब है। क्योंकि आत्मा के द्वारा आत्मा को जीतकर आत्मा सुख को प्राप्त कर लेती है।

अपने आपको जीतना महत्त्वपूर्ण कार्य है। आर्ष वाणी में कहा गया है कि एक योद्धा समरांगण में दस लाख शत्रुओं को दुर्जय संग्राम में जीत लेता है। दूसरी तरफ एक साधक पुरुष अपनी आत्मा को जीत लेता है। प्रश्न होता है, बड़ा विजेता कौन है। शास्त्रकार ने कहा है जो अपने आपको जीत लेता है, वह उसकी परम विजय होती है।

प्रश्न है, अपने आपको कैसे जीतें? हमारी आत्मा में जो राग-द्वेष रूपी विकृतियाँ हैं, क्रोध, मान, माया, लोभ रूपी कषाय है, वो एक प्रकार से शत्रु है इनको जीतना है। चारित्रात्मा, सम्यक् आत्मा जीतने वाली है। शस्त्र है–उपशम से क्रोध को जीतो। उपशम की अनुप्रेक्षा करो। शांति के अभ्यास, क्षमा और उपशम के अभ्यास के द्वारा गुस्से को जीतो।

अहंकार रूपी शत्रु को मार्दव से जीतो। माया को समता की साधना से, ऋजुता से जीतो। लोभ को संतोष से जीतो। राग को जीतने के लिए वैराग्य भाव का विकास करो। द्वेष को जीतने के लिए अनिर्ष्या की भावना, समता की भावना की अनुप्रेक्षा करो। इस प्रकार अभ्यास करते-करते अपनी आत्मा के साम्राज्य को पाया जा सकता है। अपनी आत्मा को जीता जा सकता है।

जैन दर्शन में कर्मवाद की बात अच्छे ढंग से प्राप्त होती है। आठ कर्म बताए गए हैं। इन आठ कर्मों में मुख्य हैं–मोहनीय कर्म। मोहनीय कर्म का बड़ा साम्राज्य है, परिवार है। एक मोहनीय कर्म नष्ट हो जाए तो बाद में तो सातों कर्म ही नष्ट हो जाते हैं। मोहनीय कर्म सेना में सेनापति है, प्रमुख है। सेनापति को खत्म कर दिया जाए तो फिर सेना तो भाग ही जाएगी।

गुस्सा, मान आदि मोहनीय कर्म के ही अंग हैं। यह आत्मयुद्ध है, धर्मयुद्ध है। कोई बाह्य युद्ध नहीं है। बाहर के युद्ध में तो हिंसा होती है। आत्म युद्ध शांति को प्राप्त कराने वाला होता है। भारत का मानो भाग्य है कि यहाँ संत-ऋषियों की परंपरा चलती आ रही है। अपने ढंग से संत लोग संचरण-विचरण करते हैं।

संतों की साधना अच्छी चले। संतों से जनता को सन्मति-उपदेश मिलता रहे। भारत में प्राच्य विद्या के ग्रंथ भी कितने हैं। अनेक भाषाओं के ग्रंथ में कितना ज्ञान भरा पड़ा है। भारत में धार्मिक संप्रदाय बहुत है। पंथों से पथदर्शन मिलता रहे।

दूसरों को देखना भी उपयोगी हो सकता है, पर अपने आपको देखें। अपने भीतर जाएँगे तो भीतर के शत्रु अपने आप चले जाएँगे। आत्म युद्ध की दृष्टि से अपने भीतर रहना बहुत अच्छी बात है। यह एक प्रसंग से समझाया कि जो भीतर में रहता है, उसको किसी तरह का भय नहीं रहता है। समय-समय का अंतर रहता है। हम अपने परम प्रभु के साथ रहें। हम अपने क्रोध, मान, माया, लोभ को जीतने का प्रयास करें।

आज मेलुसर आए हैं। मालू परिवार का स्थान है। परिवार में धार्मिक संस्कार अच्छे रहें।

पूज्यप्रवर के स्वागत में मालू परिवार द्वारा गीत, विकास मालू, बाबूलाल बोथरा, निशा सेठिया, संगीता बच्छावत, सिद्धार्थ चिंडालिया, राजकुमार रिणवा (विधायक) ग्राम पंचायत शीला शरण, डॉ० प्रभा पारीख (अणुव्रत समिति), गजानंदी, विद्यालय के बच्चे, बाबूलाल दुगड़ ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

यादें... शासनमाता की - (६)

● साध्वी स्वस्तिक प्रभा ●

११ मार्च, २०२२, प्रतिदिन की भाँति परमपूज्य आ०प्र० का सा०प्र० के पास पधारना हुआ।

साध्वी-समणी समुदाय द्वारा वंदना का क्रम सा०प्र० के कक्ष में न होकर अब पिछले कुछ दिनों से बाहर ही हो रहा था। सा०प्र० के कक्ष में पदार्पण के बाद–

आ०प्र० : (मुख्य नियोजिकाजी की ओर देखते हुए) कई पत्र आए हुए हैं, सुनाना हो तो सुना देवें, जैसे मौका लगे वैसे। कुछ तो सा०प्र० जी के नाम से ही पत्र आए हुए हैं।

वापिस अंदाज हम १० बजे के आसपास यहाँ आते हैं।

लगभग १०:१० पर पुनः पधारकर

आ०प्र० : कैसे हैं? ठीक हैं?

सा० सुमतिप्रभा : है, जैसे ही है।

आ०प्र० : पोढ़ाने (लेटने) की इच्छा हो तो पोढ़ा (लेट) जाए। आज डॉ० से बात करी वेदना हो जाए तो पेनकिलर दे दें? डॉ० ने कहा कि पेनकिलर नहीं देना चाहते। पेच (चंजबी) दे देवें? वो तो रात में भी लगा सकते हैं ना?

साध्वियाँ : हाँ, वो तो टेप (चाती) जैसी होती है।

आ०प्र० : वो अपने पास है क्या?

सा० कल्पलता : नहीं, अभी तक नहीं है, अब रख लेंगे। डॉ० जब उचित समझेंगे, तभी लगा देंगे।

आ०प्र० : अपने पास है ना? (नर्स की तरफ इशारा करते हुए) इनको पता नहीं क्या?

सा० सुमतिप्रभा : नहीं, इनको पता नहीं।

आ०प्र० : डॉ० से पूछकर कुछ पास में रख सकते हैं।

सा० कल्पलता : तहत्, ध्यान रखेंगे।

आ०प्र० : मतलब तकलीफ से तड़फना नहीं पड़े–यह एक ध्यान रखने की बात है।

सा०प्र० : आप प्रवचन में पधारो।

आ०प्र० : अभी ज्यादा वेदना तो नहीं है?

सा०प्र० : नहीं।

आ०प्र० : ठीक है।

सा० सुमतिप्रभा : अभी आ०प्र० पधारे, उससे पहले कुछ क्षणों के लिए चक्कर सा आ गया। सा०प्र० ने कहा कि उस टाइम ऐसा लगा कि मैं कहाँ जा रही हूँ?

आ०प्र० : चक्कर?

सा०सुमतिप्रभा : कुछ सैकेंड के लिए ऐसा लगा।

आ०प्र० : मोर पिच्छी पास में नहीं है क्या? कभी कोई जीव आदि बैठे तो ध्यान रखना चाहिए। इसमें दो बातें होती हैं–मान लो मक्खियाँ बैठ रही हैं तो कई बार बैठने से परेशानी होती है। खुद तो व्यक्ति उड़ा नहीं पाता तो मोरपिच्छी हो तो उड़ा सकते हैं। इसी प्रकार जीव-जंतु की भी बात है।

दूसरी बात, कई बार खुजली आने लग जाती है। हो सकता है व्यक्ति खुद नहीं कर पाता किंतु मोरपिच्छी आदि से थोड़ा ऐसे कर दे। ये आसपास में रहनी चाहिए, जब जरूरत पड़े तब काम में ले लें।

लगभग ३:४० पर आ०प्र० का पुनरागमन–

आ०प्र० : होम्योपैथी चल रही है?

सा० कल्पलता : हाँ।

आ०प्र० : प्रति घंटे से।

सा० कल्पलता : तहत्। सरदारशहर से कनकमलजी दुगड़ का समाचार आया कि गुरुदेव की मर्जी हो तो वैद्य को लेकर मैं खुद आ जाऊँ।

आ०प्र० : फिर एलोपैथी वाले।

सा० कल्पलता : वो लोग तो ना ही कह रहे हैं।

आ०प्र० : (कुछ समय सोचकर) एक बार नहीं में ही रखते हैं।

सा०प्र० : आचार्यश्री के कितनी मेहनत हो जाती है?

आ०प्र० : नहीं-नहीं।

सा० सुमतिप्रभा : सा०प्र० जी ने फरमाया कि आ०प्र० शाम को लगभग ६:१० पर वापिस पधारते हैं, अब ६ बजे तक पधार जाएँ।

(शेष अगले अंक में)

(क्रमशः)

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै. जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज, औद्योगिक क्षेत्र, दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली - 110 002 से प्रकाशित। कार्यकारी संपादक : **दिनेश मरोठी**